मूल्य रु. ५-०० सलंग अंक ८४ अप्रैल-२०१४

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख

मासिक

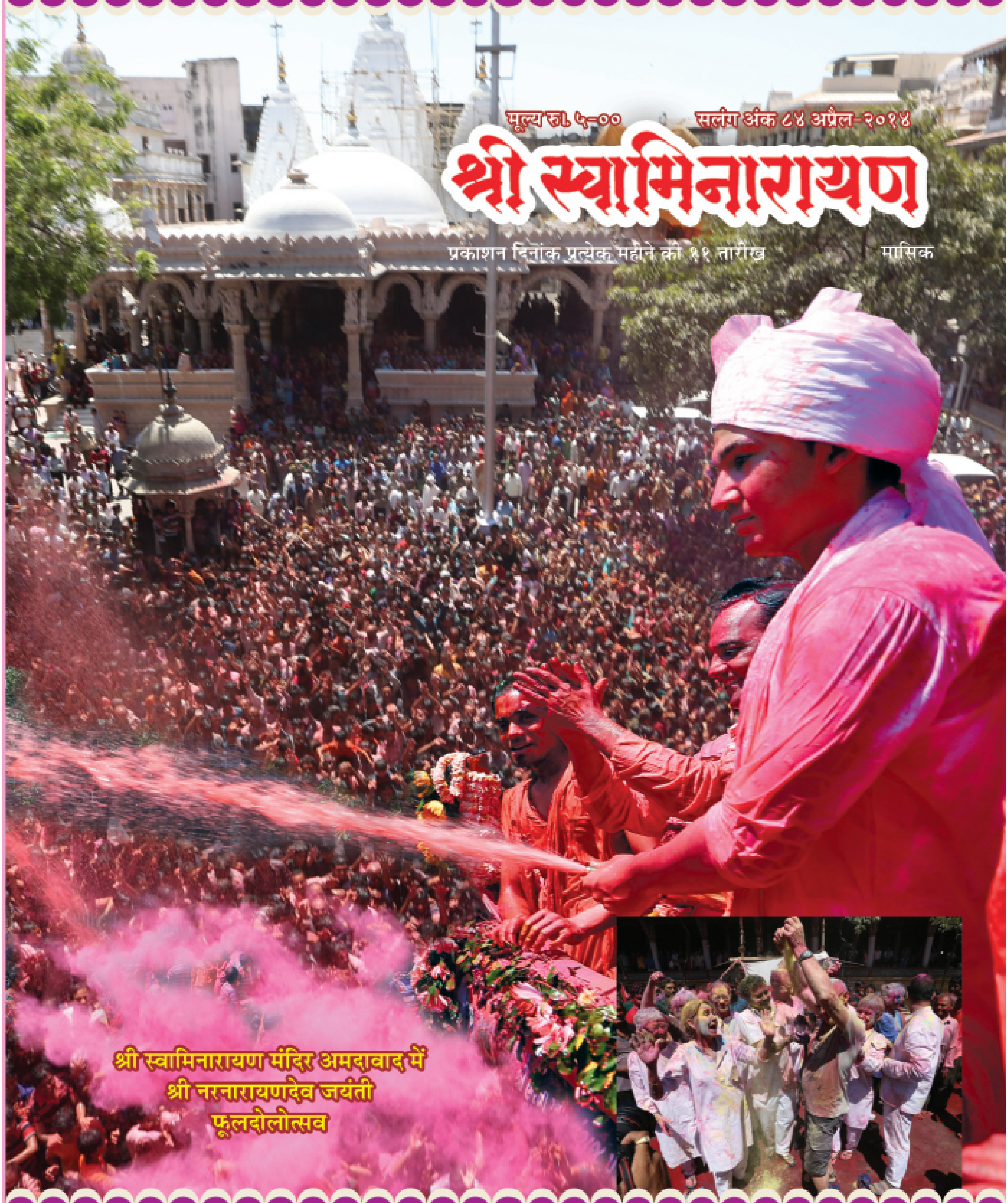

श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद में
श्री नरनारायणदेव जयंती
फूलदोलोत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) जेतलपुर मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री तथा सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारते हुए यजमान परिवार ।(२) मूलीधाम श्री स्वामिनारायण मंदिर में गुरु मंत्र महोत्सव प्रसंग पर गुरुमंत्र प्रदान करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(३) श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया में पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री तथा सभा में दरशन देते हुए प.पू. महाराजश्री ।(४-५) श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में गांगड गाँव में तथा नवावाडज में सत्संग सभा को संबोधित करते हुए संत ।(६) कलोल पंचवटी में निर्माणाधीन मंदिर ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ७ • अंक : ८५

अप्रैल-२०१५

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ • फोक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५

०३. चन्दन करने लक्ष्मी आयी ०६

०४. अक्षरधाम का द्वार ०८

०५. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृतवचन १०

०६. श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से १२

०७. सत्संग बालवाटिका १४

०८. भक्ति सुधा १६

०९. सत्संग समाचार २०

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० • वंशपारंपरिक देश में ५०१-०० • विदेश १०,०००-०० • प्रति कोपी ५-००

॥ अस्मदीयम् ॥

''ज्यारे हृदय में विषे मोह व्यापे त्यारे ए जीवने पोतानो अवगुण तो सूझेज नहि'' इसलिये स्वयं का अवगुण दिखाई नहीं देता, यही मोहका रुप है। इसके अलांवा जीव मात्र को अपने बुद्धिमानी का अभिमान होता है, और ऐसा वह विचार नहीं करता जो, मने मारा जीवनी खबर नही जे आ शरीर मां जीव रह्यो छे ते कालो छे के गोरो छे, के लाबो छे के टूंको छे एनी खबर नथी, तो पण मोटा पुरुष होय अथवा भगवान होय तेने विषे पण खोटय काढे, अने एम समझे जे आ मोटा पुरुष छे अथवा भगवान छे पण आटलुं ठीक करता नथी। एम खोटयकाढे छे। पण ए मूर्खो एम नथी जाणतो जे, ''ए भगवान तो अनंत कोटि ब्रह्मांड ने विषे रह्यां एवा ने जीवने ईश्वर तेने जेम हथेलीमां जलनुं टीपुं होय, ने तेने देखे तेम देखे छे। अने अनंत कोटि ब्रह्मांडना आधार छे, ने लक्ष्मीना पति छे, अने अनंतकोटि ब्रह्मांडना कर्ता हर्ता छे. अने शेष शारदा ने ब्रह्मादिक देव, ते पण जेना महिमा ना पारने पामता नथी, अने निगम पण जेना महिमाने नेतिनेति ''कहे छे माटे एवा जे परमेश्वर तेना चरित्र ने विषे, ने ते भगवाननी जे समझण तेने विषे, जे दोष देखे छे तेने विमुख ने अधर्मी जाणवो अने सर्वे मूर्ख नो राजा जाणवो।(ग.म.५३)

इसलिये प्रिय भक्तो ! भगवान के मिलने के बाद जहाँ तहाँ भटकने की जरूरत नहीं। एक ही ध्येय, एक ही सिद्धान्त हमें मिला है जो सर्वोपरि भगवान हैं। सभी के कर्ता हर्ता है। इसके अलांवा कोई दूसरे भगवान नहीं है। ऐसी दृढ गांठ बांधकर रखनी चाहिये। ऐसा करने से अपना निश्चित ही कल्याण होगा।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मार्च-२०१४)

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर चराडवा कथा प्रसंग में पदार्पण ।
२. श्री स्वामिनारायण मंदिर रिद्रोल कथा प्रसंग में पदार्पण ।
३. श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद में परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के १९ वें पाटोत्सव का महाभिषेक अपने वरद् हाथों से संपन्न किये ।
४. श्री स्वामिनारायण मंदिर सापावाडा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
५. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
६. सुघड (गांधीनगर) गाँव में कथा प्रसंग पर पदार्पण ।
७. लवारपुर गाँव में प.भ. गोकलभाई पटेल परिवार की तरफ से आयोजित कथा प्रसंग में पदार्पण ।
८. श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापूनगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
९. डागंरवा श्री स्वामिनारायण मंदिर कथा प्रसंग पर पदार्पण ।
१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर राणीप कथा प्रसंग पर पदार्पण .
११. श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर मूलीधाम गुरुमंत्र महोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
१४. प.भ. कांतिभाई नरसिंहभाई पटेल के यहां महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, ड्राईव-इन रोड ।
१६-१७ सुखपर (कच्छ) पदार्पण ।
१८. श्री स्वामिनारायण मंदिर टींबा (मूली देश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
१९. श्री स्वामिनारायण मंदिर सूर्यनगर (मूलीदेश) खात मुहूर्त प्रसंग पर पदार्पण ।
२०-२१. नारायणपर (कच्छ) पदार्पण .
२२. श्री स्वामिनारायण मंदिर इंगोराला (मूली देश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
२३. श्री स्वामिनारायण मंदिर आकरुंद (बायड) पदार्पण ।
२४. श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर धाम श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण रात्रि में ही रापर (कच्छ) पदार्पण ।
२५. हीरापर (कच्छ) पदार्पण ।
२६. श्री स्वामिनारायण मंदिर सादरावासणा पदार्पण ।
२७. श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२८. श्री स्वामिनारायण मंदिर कोठंबा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२९-३०. श्री स्वामिनारायण मंदिर मंदिर मांडवी (कच्छ) पदार्पण ।
३१-७ अप्रैल ओकलेन्ड न्युझीलेन्ड श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मार्च-२०१४)

३. परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के १९२ वें पाटोत्सव प्रसंग को अपने हाथों संपन्न किये ।
१७. श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद में श्री नरनारायणदेव जयंती महोत्सव अपने वरद् हाथों से संपन्न किये ।

चन्दन करने लक्ष्मी आयी

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

भगवान श्री सहजानंद स्वामीने अपने हाथों से शिक्षापत्री लिखकर ४३ वें श्लोक में आश्रितों के लिये आज्ञा की कि तिलक के मध्य में जो चन्दन है वह गोपी चन्दन का होना चाहिये अथवा राधिकाजी के या लक्ष्मीजी के प्रसादी भूत कुंकुम का मस्तक पर लेप करना चाहिये । शतानंद स्वामी ने शिक्षापत्री भाष्य में लिखा है कि (ासर संग्रह विष्णु धर्मोन्तर में कहा है कि) वैष्णव तिलक के साथ कुंकुम का लेप भगवान की प्रसन्नता हेतु अवश्य करें । राधा लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिये गोलाकार कुंकुम लगाना चाहिये । अथवा उनकी सेवा में बचा हुआ कुंकुम प्रसाद के रुप में मस्तक पर लगाना चाहिये । इससे लक्ष्मीजी प्रसन्न होती हैं । पुराने जमाने की एक कहावत भी है कि लक्ष्मी जब चन्दन करने आवें तो मुह धोने की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिये । अर्थात् चंदन तो अवश्य करना चाहिये । इसके लिये समय, देश, काल, नक्षत्र, दिन, रात के दिखने की जरुरत नहीं । चन्दन करना ही लक्ष्मी प्राप्ति की निशानी है । जो भक्त कुंकुम से राधाजी की पूजा करते है वही कुंकुम लक्ष्मीजी पूजा करने वाले को प्रसन्नता के प्रतीक रुप में चंदन का दान करती हैं । इसलिये माताजी के मंदिर में भक्त मात्र कुंकुम लेकर पूजन करने जाते हैं । जब भक्त दर्शन करते हैं तब पुजारी भक्त कों कुंकुम लगाते है । कुंकुम विजय की सूचना देता है । कुंकुम धन, धान्य, समृद्धि, रिद्धि, सिद्धि, विध्न विनाश इत्यादि का परिचायक है । चंदन करने वाले पर किसी की नजर दोष नहीं लगता । चंदन करने वाले के घर धन संपत्ति का बास होता है । चंदन लगाने वाले के घर में लक्ष्मी-राधा निवास करती है । राधाजी उत्तम भक्त की मूर्ति हैं तो लक्ष्मीजी धन समृद्धि की मूर्ति है ।

इसलोक की सिद्धि के लिये लक्ष्मीजी की कृपा तथा परलोक की प्राप्ति के लिये राधाजी की कृपा आवश्यक है । प्रारब्धचाहे जैसा हो, लेकिन मस्तक पर चंदन हो तो राधाजी की तथा लक्ष्मीजी की अहैतुकी कृपा होती है । धनवास के पास सगे सम्बन्धी किंछकर आते है । इसी तरह चंदन करने वाले के घर अखंड सम्पत्ति रहती है । तिलक चन्दन देखकर राधा-लक्ष्मी उसके घर को अपना घर मानकर सदा वहीं रहती है । सौभाग्यवती स्त्री का सौभाग्य कुंकुम है, उसी तरह भक्तों का सौभाग्य तिलक चंदन है । एक कविने देवीजी का भजन लिखा है कि ''माडी तारु कंकु खर्युं ने सूरज उगीओ'' कुंकुम देखकर लक्ष्मीजी का सूर्योदय होता है । कवि नारायणदासने कीर्तनमें लिखा है कि -

''कुंकुम नो चांदलो ने भाले तिलक कर्युं,
हारे कंठे धारी माणेक जडी माला,
घनश्यामजी प्यारे लागे मूरति तमारी ।''

श्रीजी महाराज नित्य चन्दन तिलक करते थे । किसी के भी मस्तक पर कुंकुम देखकर प्रसन्न होते थे । कोई सत्संगी कुंकुम न किया हो तो नाराज हो जाते । उसे उलाहना भी देते थे । मन के संकल्प को पूर्ण करना हो तो कुंकुम अवश्य लगाना चाहिये । काम को निर्विध्न पूर्ण करना हो तो तिलक अवश्य करना चाहिये । धनवान हो तो तिलक अवश्य करे । तिलक किये होंगे तो प्रारब्धमें न होते हुए भी लक्ष्मीजी घर आयेंगी । कर्ज हो गया हो तो जल्दी भरा जायेगा । व्यवसाय में बढत होती हो तो चंदन लेपन से बढत होगी । जीवन में आर्थिक समस्या नहीं आयेगी । एकी तकी आवक बढेगी । घर में भगवान के साथ राधा-लक्ष्मीजी का वास रहेगा । तिलक चंदन करना प्रारंभ कर दीजिये । शर्म नहीं आनी चाहिए । कुछ समय तक नया जरुर लगेगा । बाद में आदत हो जायेगी सज्जन, सत्संगी, छोटे, बड़े, माता-पिता संत पुरुष सभी आपके तिलक को देखकर प्रसन्न होंगे । सभी आपको आशीर्वाद देंगे । जब प्रातः पूजा करो तो प्रसाद के चन्द का लेप कीजिये । जिस तरह रुपये को बचाकर रखते हैं उसी तरह दिनभर चन्दन को बचा कर रखें ।

मश्करी करने वाले दुश्मन हैं । आप सुखी हों यह उन्हें अच्छा नहीं लगता । दृढ मनोबल रखकर प्रारंभ कर दो । एक वर्ष तक चंदन लगाकर देखें, हर तरह से कायदा होगा । भगवान का यह वचन है – अवश्य फांयदा होगा । यदि थोड़ा भी लाभ न हुआ हो तो बन्द कर देना । तिलक करके स्कूल जाने के समय शरम नहीं करना । नौकरी के समय भी तिलक करके जाने में शर्म नही करना । इन्टरव्यू के समय भी शर्म नहीं करना । यात्रा के समय भी शर्म नहीं करना । लग्न शुभ प्रसंग के समय भी शर्म नहीं करना । क्योंकि वर को तिलक चन्दन तो किया ही जाता है । मंदिर आने के समय तिलक करके आइये । तिलक चंदन करने से राधा-लक्ष्मी तथा नारायण साथ में पधारते हैं । अपने आश्रितों को सुखी करने के लिये श्रीजी महाराजने यही सरल उपाय बताया था । जो स्त्री कुंकुम की हो वह सधवा होती है जो नहीं की हो वह विधवा होती है । सधवा के मस्तक पर कुंकुम होने से प्रत्येक शुभ प्रसंग में आगे रखा जाता है । जिस तरह स्त्री का सौभाग्य कुंकुम है । उसी तरह सत्संगी का सौभाग्य तिलक चन्दन है । भगवान आपके चन्दन को देखकर खूब प्रसन्न होंगे । राजा के राज्याभिषेक अर्थात् राजगद्दी के समय तिलक किया जाता है । तिलक ही सत्ता है । जिसकी जीत होती है उसका तिलक होता है । नये मकान के चौखट पर कुंकुम का स्वस्तिक किया जाता है । नूतन गाड़ी लाते हैं तब तिलक कियाजाता है । षोडसो पचार में पुजारी का मतलब चंदन लेपन और सभी प्रकार का लाभ ।

सभी जगहों पर चंदन लगाने की परंपरा है । एक मात्र मृत्यु प्राप्त व्यक्ति को तिलक नहीं किया जाता है । मृत्यु प्राप्त व्यक्ति के घर में १० दिन तक तिलक चंदन नहीं किया जाता । यह अशुभका सूचक है । चंदन के विना व्यक्ति शूद्रकी कहा जायेगा । भगवान श्रीकृष्ण सुदामा को तिलक चन्दन किये तो घर पर अढडक सम्पत्ति हो गयी । देश-विदेश जहाँ भी रहते हों चन्दन अवश्य लगाये । इसमें थोडा भी संकोच नहीं करना चाहिये । आज के युवान शूरवीर होते हैं उन्हें तिलक करने में थोडा भी संकोच नहीं होता । चंदन के विना मनुष्य विना पता की यात्रा है । सत्संगी की पहचान तिलक चंदन है । अपनी यह पहचान को छिपाना नहीं चाहिये । जिस तरह कंपनी का अपना सेम्बल होता है, उसी से उसकी कीमत होती है, ठीक उसी तरह सत्संगी मात्र को समझना चाहिये । भगवान के दोचरण रुपी नतलक के बीच में लक्ष्मी-राजा रुपी चंदन किये विना बाहर निकलना नही चाहिये । आज कल लोग रिद्धि-सिद्धि प्राप्ति के लिये नाना प्रकार के उपाय करते हैं । लेकिन सरल उपाय अपने इष्टदेव भगवान श्री स्वामनारायण ने तिलक-चन्दन बताया है । इसमें दो प्रकार से फायदा पहला तो भगवान के वचन का पालन दूसरा समृद्धि की प्राप्ति ।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info

www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

अक्षरधाम का द्वार

– प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (अमदावाद)

अहमदावाद श्री नगर में श्री नरनारायणदेव देश के पूर्वपीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के दिव्य संकल्प से श्री स्वामिनारायण म्युजियम का निर्माण हुआ । परम कृपालु परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान का यहाँ पर तादृश्य अनुभव होता है । यह म्युजियम मात्र ईंट, चूना, पत्थर से नहीं बना है, यहा तो श्रीहरि के आविर्भाव रुपी आशीर्वाद से प.पू.ध.धु. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के संकल्प का मूर्त स्वरुप है । पूर्व में जिस तरह सच्चिदानंद स्वामी का भी संकल्प मूर्त स्वरुप धारण करता था ठीक वैसे ही श्रीहरि के ६ट्ठे वंशज तपोमूर्ति, श्रीहरि को अखंड धारण करने वाले, ब्रह्ममूर्ति के समान ऐसे महापुरुष के संकल्प को श्रीहरि अचूक पूर्ण करते हैं ।

प.पू. बड़े महाराजश्री के पास वंश परम्परा से प्राप्त प्रसादी की वस्तुए संग्रहीत थी । श्रीहरिने स्वयं अति प्रसन्नतापूर्वक आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री को दी थी । जिसे पूर्वाचार्य बड़ी श्रध्धा के साथ रक्षण किये थे । करुणा के सागर बड़े महाराजश्री ने सभी सत्संगियो को महाराज के प्रसादी की वस्तुओं का लाभ मिले इस हेतु से एक अत्यंत आधुनिक महाराज के प्रसादी का लाभ मिले इस हेतु से एक अत्यंत आधुनिक महाराज के प्रसादी का संग्रह स्थान म्युजियम बनाने का संकल्प किया तथा उसकी पूर्ति के लिये वर्तमान पीठाधिपति प.पू.ध.धु. श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को सौंप दिया । स्वयं आचार्य पद से निवृत्त होकर भी सत्संग की प्रवृत्ति में लगे रहे । संत-हरिभक्तों को साथ लेकर देश-विदेश हरिभक्तों के घर जाकर उन्हें दर्शन देकर – कथा करके श्रीहरि की कृपा से सभी की मनोकामना पूर्ण करके सभी को सन्तुष्ट किया । सभी के सामने अपने संकल्प को रखा तथा श्रीहरि की ईच्छा से सभी संत-हरिभक्त महाराज की प्रसादी की वस्तुओं को जो अलभ्य थी उन्हें प.पू. बड़े महाराजश्री के चरण में रख दिया ।

श्रीहरि की ईच्छा तथा महापुरुषों का संकल्प हरिभक्तों के तन-मन-धन का पुरुषार्थ संप्रदाय के लोग द्वारा अनेंको प्रकार के सहयोग से श्री स्वामिनारायण म्युजियम पूर्ण होगया । इस में जितना रुपये लगे उसके अधिक तो संत हरिभक्तों की भजन-भक्ति का सार लग गया है । इस में जितना पानी लगा है, उससे अधिक संत-भक्तों के स्वर बिन्दु लग गये हैं । इसमें जितना समय लगा है उससे अधिक समय तक इस म्युजियम की तरंग विश्व में फैलेंगी । जितने जीवों की सेवा इस में लगी है उससे अधिक लोग मोक्षमार्ग पर जायेंगे । सभी जीवों के कल्यण का एक मात्र साधन सिद्ध होगा ।

इन सभी के देखने-विचारने की दीर्धा दृष्टिवाले आचार्य महाराजश्री की कृपा दृष्टि इस अमदावाद देश के ऊपर पड़ी । अपने दादा भगवान श्रीहरि की तरह वे भी अपार करुणा करके इस मंगलमय, अलौकिक, ऐतिहासिक स्थान का निर्माण कराकर संप्रदाय को समर्पित कर दिया । यहाँ पर संस्कार की सुवास है । सुवर्तन का एहसास है । श्रीजी की अनुभूति है धर्मवंशी आचार्य की कृपा है । नंद संतो का आशीर्वाद है । सभी जीवों को अलौकिक आनंद देने वाला यह स्थान है । अपनी बड़ी भाग्य है कि यह सुंदर सुयोग मिला है । प.पू.ध.धु. आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का आशीर्वाद है कि जो यहाँ दर्शन करने आयेगा उसका सर्व विधश्रीहरि कल्याण करेंगे ।

यहाँ पर विराजमान श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा की पूजा जो स्वयं श्रीहरि करते थे, सभी के अभिषेक हेतु किसी प्रकार का प्रतिबन्धनहीं हैं । यहाँ पर महापूजा तथा अभिषेक कराने वाले की मनोकामना अवश्य पूर्ण होती है । इस घोर कलिकाल में जीव के सर्वविधकल्याण हेतु

पू. महाराजश्री ने इतनी सुंदर व्यवस्था की है ।अनेक लोग चाहे सत्संगी हो या कुसंगी हो जो भी यहाँ आता है उसका कल्याण होता है।

दुनिया के लोग धर्म को धंधा बनादिये है, धर्म के नाम पर लोग भले मनुष्यों को ढग रहे है ठीक उसी परिप्रेक्ष्य में यह म्युजियम यह प्रदेश में सुख और शान्ति प्रदान करने वाला तथा भय मुक्त करने वाला लोगो को बना रहा है । यहाँ के वातावरण में स्वत: वाणी, व्यवहार में पवित्रा का एहसास होने लगता है । यहाँ के अभिषेक का जल अनेकों प्रकार की व्याधियों पर मलहम का काम करता है । यह अनुभव एक-दो व्यक्ति का नहीं है, बल्कि गरीब-अमीर, संत-महंत, महिला-पुरुष, सत्सगी कुसंगी सभी जीवों का है।

यहाँ पर श्रीहरि के प्रसादी के पात्र, वस्त्र, शस्त्र, शास्त्र, खडाऊँ, जूता, चरणारविंद, गद्दी-तकिया, मूर्ति श्रीहरि के हस्ताक्षर वाले पत्र दर्शनार्थ रखे गये हैं । श्रीहरि के मुख का दांत, नख, शिखा का केश, अस्थि इत्यादि को दर्शन के लिये रखे गये हैं । श्रीजी के अनेक लीला चरित्रों जैसे कि डभाण - जेतलपुर के यज्ञ के समय उपयोग में लाये गये पत्र, वहेलाल का दरवाजा, नरनारायणदेव की खिड़की, रंगोत्सव में उपयोग की गयी पिचकारी, अमदावाद श्री ननरनारायणदेव के सभी आचार्यों का हस्ताक्षर, श्रीजी के अभिषेक के समय का दुपट्टा, बहुत सारे नंद संतो के हस्ताक्षर इत्यादि वस्तुओं का सम्पूर्ण संप्रदाय में कहीं दर्शन नही होता है । एकमात्र यहीं पर दर्शन का सुख मिलता है। दादानो वर्ष पूर्व के इतिहास का स्मरण कराता है । इस दर्शन से मन का श्रीहरि के साथ तादात्म्य सम्बन्धहो जाता है । कम पुरुषार्थ में भी अक्षरधाम की प्राप्ति होती है । मंदिर में श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके, यहाँ पर श्री स्वामिनारायण म्युजियम के प्रसादी की वस्तुओं के दर्शन के बाद कुछ बाकी रहता नहीं है । श्रीहरि के प्रसादी की वस्तुओं के दर्शन के बाद कुछ बाकी रहता नहीं है । श्रीहरि का दृढ आश्रय, धर्मवंशी आचार्य से कंठी-दीक्षा मंत्र, शिक्षापत्री का प्रतिदिन पाठ करने से अक्षरधाम के मार्ग में कहा रुकावट नहीं होगी ।

म्युजियम का कविन्त :

राग : पूर्व छाया

बीजा स्थानक तो बहुत छे, पण आ जेवु नही बीजु कोय ।
डगले पगले चातां जेया, श्रीहरिनी अनुभूति होय ॥१॥
आचार्य तेजेन्द्र ए कर्यो संकल्प, धरी श्रीहरिनुं तेज मनमांय ।
अनंत जीव उद्धारवाने, कर्युं म्युजियम श्रीनगर माय ॥२॥
अनंत प्रसादी पोतेपाम्या हता, स्वामी श्रीजी की साक्षात् ।
सर्व ते सत्संगियो ने अर्पण करी, नथी नानी-सुनीओ वात ॥३॥
संत गृहस्थो ने लई साथमां, धूमी वड्य देश-परदेश ।
श्रीजीने ओडखाविया, मणा राखी नहि लवलेश ॥४॥
भेट सोगात चे चरणे आवी, तेने आव्यापण नहि पोते ।
तेउपरातं तेमां पोतानुं उमेरी, कर्युं म्युजियम सहु जोते ॥५॥
श्रीजीना वस्त्रो, शस्त्रोने पात्रो वड़ी, चरणारविंद पधराविया ।
जामो अंगरखुं पाघने मुकुट, माथे श्रीजी ए जे धारिया ॥६॥
शास्त्रो लख्या लख्याव्या पोते, चीज वस्तु जेजे वापरी ।
धोती पीताम्बर खेस ने टोपी, चाखड़ी मोजडी जे चरणे धारी ॥७॥
स्वहस्ते जेमां दस्तक कर्या, ते पत्र पण पधरावियो,
मुख कमलमांथी दाढ श्रीजीनी, दर्शनार्थे देवगण पण त्यां आवियो ॥८॥
अंगना नहवने बडी केश ने शिखा तणा ।
अस्थि कुंभना दर्शन करी, जोई रह्या विस्मयथी घडा ॥९॥
नरनारायणदेव नो, जिया नित्ये थाय अभिषेक ।
अनंत मुक्तों धामो धामथी, आवे दर्शन धरी विवेक ॥१०॥
धर्मवंशी धर्माचार्यनो, रुडो आशीर्वाद धारी ऊर ।
पूर्ण करे मनेकामना, तेमां श्रीजी न जुये नरनिर्जर ॥११॥
अनंत धन दोलत मले, पण श्रीजीनी प्रसादी अतुल ।
शेष महेश ने शारदा, गाय नित्य गुण तेना अमुल ॥१२॥

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृतवचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

अहमदावाद मंदिर श्री नरनारायणदेव का वार्षिक पाटोत्सव ता. ३-३-२०१४ : हम बड़े भाग्यशाली हैं, इस लिये कि हमें भगवान श्री नरनारायणदेव को स्वंय श्रीहरिने अपनी बाहों में भरकर प्रतिष्ठित किया है । श्री नरनारायणदेव के दर्शन करने से सभी प्रकार की पीड़ा-दुःख, दारिद्र नष्ट हो जाते हैं, सुख और शांति मिलती है । हम सभी जो भी उस्तव करते है उन सभी का मूल कारण ये देव है । देव को प्रसन्न करने के अनेंको साधन हैं । हमें अपने मन में एक गांठ बाधकर रखनी चाहिये कि हमें देव मिले हैं, इसलिये सब कुछ मिल गया । महाराज अपने आश्रितों को ग्रन्थिबन्धन करके रखते हैं । अन्न-वस्त्र-प्रतिष्ठा इत्यादि की कमी नहीं होने देते । कोई भूखा नहीं रहता । दूसरा और क्या चाहिये १ अधिक पैसा हो तो क्या कोई पैसा रखता है ? पैसे से भूख का संतोष नहीं मिलता । अन्न से ही भूख मिलती है । हाँ अधिक पैसे वालों को दुःखी होते देखा गया है । इससे इतना लेना बाकी है । देता नहीं । इत्यादि रुप में पैसे वालों को तो समस्या रहती ही हैं । पैसे दुर्लभ नहीं है । जो बजार में जायेगा तो उसे पैसा मिलने वाला ही है । परंतु देव को बाजार में मत ले जाइये, अथवा देव को व्यापार की दृष्टि से मत देखे । आपकी बाहों में जितनी ताकत है उनका आप कमाइये, इसके लिये मना नहीं है । एक दुकान करो, दो करो, पाच करो, दश करो, परंतु आधी रात में कोई उठाकर कहे कि पैसा किसने दिया है तो कहना चाहिये कि महाराजने जिस देव श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किया है उन्हों ने दिया है। सुख आवे या दुःख आवे फिर भी देवका त्याग नहीं करना चाहिये । महाराजने वचनामृत में कहा है कि हम जिन पर प्रसन्न होते हैं, उसका हम सब कुछ लेलेते हैं। जिससे वह जीव निर्वासनिक होकर हमारी भजन करे तथा हमारे धाम को प्राप्त करे ।

हमें भगवान की पहचान करने की जरुरत नहीं है । महाराजने स्वयं अपने स्वरुप श्री नरनारायणदेव हम सभी के कल्याणार्थ दिया है । कितने लोग भगवान की भी चोइस (पसंदगी) करते रहते हैं । कितने लोगों को सच्चे भगवान तो मिलते हैं लेकिन वे पचा नही पाते इस लिये वे कहते हैं कि ये भगवान छोटे हैं और भगवान बड़े हैं । ऐसा कहकर वे अलग हो जाते हैं । उसका कारण यह है कि उन्हें यहाँ पर मान नही मिला । उन्हें पुजाने का सुख नहीं मिला इसलिये यहाँ आना बंद कर देते हैं । बाद में अपनी पसंदगी के भगवान को ढूढने निकल पडते हैं । अन्यत्र उन्हें खूब आव भाव मिलता है और अपने को सुखी मानने लगते है, इतना नहीं, उनके घर में जो कमियां हैं वे भी पूरी कर दी जाती हैं । ऐसे व्यक्ति यहाँ आकर अन्य हरिभक्तों से कहते हैं कि क्या यहाँ बड़े हो चलो मेरे साथ जो तुम जीवन में नहीं कर के वह हम थोडे समय में कर दिये । हमारे यहाँ बाथरुप में भी ए.सी. लग गई, आपके यहाँ तो ऐसे का ऐसा ही है न ? हाँ ऐसे लोग जिन्हे यहाँ ताप का अनुभव होता हो वे यहाँ से अवश्य ले जांय ।

दुनिया को जो भी कहना हो कहे, अपनी निष्ठा अडिग होगी तो कहीं जाने की जरुरत नहीं ? माल कम फेरेंगे तो चलेगा पचंवर्तमान में कुछ कमी रहेगी तो चलेगा ! प्रायश्चित उसका विधान है लेकिन निष्ठा में फेर

होगा तो उगरना बड़ा कठिन होगा । कंठी पहने से तथा तिलक लगाने से सत्संगी नहीं होते, बल्कि - यहीं से सत्संग का प्रारंभ होता है । बाद में धीरे-धीरे परिपक्वता अडगता आती है । बाल्यावस्था में बालक बहुत चंचल होता है।

वह स्थिर नहीं बैठता ? जब युवान होता है तो ताकत के कारण कहीं बाहर जाकर बाज आता है झगड़ा कर आता है । जब और उम्र होती है तो स्थिर होजाता है । इस लिये कि उसमें उत्तर दायित्व का भान होने लगता है । इसी तरह सत्संग में भी जो सरा जड़ा रहेगा तो उसकी निष्ठा दृढ़ होती जायेगी ।

हम सभी को देव को प्रसन्न करना है । महाराजने आचार्य की महिमा के विषय में बताया है कि आचार्य हमारे स्वरुप है । हम उन्हीं में रहते हैं .... इत्यादि इत्यादि .... परंतु इस गादी पर बिराजमान किसी आचार्य को स्वयं को पुजाने की कभी भावना नहीं हुई । आचार्य भी देव के दास होकर ही रहते हैं । यदि वे पुजाने लगें तो देव उन्हें भी बाहर निकाल दें ।

आज के दिन जिस तरह आप सभी को प.पू. बड़े महाराजश्री के चरण स्पर्श की लालच रहती तै, ठीक इसी तरह हमें भी श्री नरनारायणदेव के साक्षात् चरण स्पर्श की लालच रहती है । महाराज जब संतो की पंक्ति में भोजन रसने के लिये पधारते तब संत भोजन करके तृप्त हो गये होते थे फिर महाराज उन्हे आग्रह करके खिलाते तो खीर नही लेते लड्डु अवश्य ले लेते थे । इसका कारण क्या है ? खीर तो धार से लगातार गिरने वाली वस्तु है, जब कि लड्डू तो महाराज के हाथों मिलने वाला होता है, हाथ से सीधा संबन्धलड्डू का होने से सभी के मन में ऐसी पवित्र भावना होती थी । अभी डाक्टर साहबने कहा कि धुटने की तकलीफ वाले रोगी हमारे यहाँ अधिक आते है । (यजमान परिवार के एक सदस्य ने आपरेशन करवाया उसके अनुसंधान में) हमने कहा कि इसी कारण से हमारे सत्संगी जब लड्डू अधिक खाते हैं तो उनका पेट बढेगा, छाती बढेगी, शरीर का भार बढेगा, जिसका सीधा सम्बन्धकमर के साथ तथा घुटने के साथ होगा, - इससे कमर की तकलीफ तथा घुटने की तकलीफ होना संभव है । निर्गुण स्वामी जैसे वक्ता हों उनकी कथा के शब्द जो ध्यान से न सुना जाय तो मस्तक के ऊपर चला जायेगा, यदि ध्यान से सुनाजाय तो सीधा जीव में उतरेगा । इतना कहकर सभी का कल्याण हो ऐसी मंगल कामना किये थे ।

निःशुल्क एडमीशन

आदि आचार्य प्रवर प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा संस्थापित श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय जेतलपुर में श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी (गुजरात सरकार) के अभ्यासक्रम में कक्षा ९ से एम.ए. तक के वर्ग चलते हैं । जिस में छात्रालय तथा पढने की सभी प्रकार की निःशुल्क सुविधा श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुरधाम द्वारा दी जाती है । आगामी वर्ष २०१४ से कक्षा ८ पास विद्यार्थी को एडमीशन दिया जायेगा । इसलिये संप्रदाय में मुक्त सुविधा देने वाली एकमात्र संस्कृत महाविद्यालय में प्रवेश की चाहना वाले लाभार्थियों को योग्यता के आधार पर प्रवेश दिया जायेगा ।

ता. १-५-२०१४ से ता. ५-५-१४ तक ओरिजिनल मार्कसीट लेकर इन्टरव्यु के लिये आना होगा ।

स्थल : श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय
जेतलपुरधाम (प्रसादी की वाडी)
प्राधानाध्यापक मो. : ९८२५३४७९६९ (डॉ. मिश्रजी)
प्राध्यापक मो. : ९४२७०३३७८० (वी.डी. पुरोहीत)

जेतलपुरधाम में पुरश्चरण सत्कर्म आयोजन

वृन्दावन से अधिक भूमि जेतलपुरधाम में प्रसादी की वाडी में श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय में अभ्यास करने वाले भूदेवों द्वारा विष्णुयाग, मारुती याग, हरियाग इत्यादि यज्ञ तथा जनमंगल, सर्व मंगल, नारायण कवच, विष्णु सहस्त्रनाम इत्यादि का पुरश्चरण पाठ किया जाता है । पुण्य भूमि में अधिकाधिक फल प्राप्त करने की इच्छा वाले कमकीमत में अधिक फल प्राप्त करने हेतु श्री स्वामिनारायण सं.म.वि. जेतलपुर प्रसादी की वाडी का संपर्क करे ।

संयोजक :
प्राध्यापक वासुदेवजी पुरोहित मो. ९४२७०३३७८०
महंत स्वामी मो. ८५३०३९७४७२

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

लिखाविंत स्वामीश्री ७ सहजांदजी महाराज जतश्री हवत्युरेकृत निवास विद्वद्जनाग्रगण्य विप्रेन्द्र शिव .... नारायण वांचजो अपरंच लखावाकारण एम ....

.... सपिंड ने करवानो लख्यो होय तो अग्रण्यो होय ते सामवेदी अने एने विषे मरण क्रियानो विधिन होय तो .... गाममां सामकी ब्राह्मणने घेर सपींडी करण विधिजेमा लख्यो होय ते .... होय तो ते जरुर मोकलजो एनो आपणे जरुर बव छे अने कृत्य चिंतामणी मां जो सपिंडीकरण नो विधिलख्यो होय तो ए ग्रन्थ जरुर मोकलजो आ काम अवश्यपणे करवानुं छे माटे कृत्य चिंतामणीमां ए पिंडीकरणनो विधिहोय तो ए ग्रंथ तथा बीजु .... बेय ने मोकलजो । बीजु कोईक सत्संगी .... तो तेनी भेले आ ग्रंथ मोकलजो अने न आवतो होय तो । काम सारु जरुर मोकलजो । ए ग्रंथ नो आपणे जरुर काम छे माटे कागड़ लख्यो छे । ता सारु ए काम जरुर करजो । आलस राखसो मा ॥ संवत १८८३ ना आषाढ वदी-१२ ॥ लेखक शुकमुनिना नारायण वांचजो ।

स्वयं श्रीहरिने यह पत्र लिखवाया था । जिस पत्र के दर्शन का सभी को लाभ मिले इस हेतु से श्री स्वामिनारायण म्युजियम होल नं. ९ में रखा गया है । सभी हरिभक्त उसका अवश्य दर्शन करेंगे ।

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें ।
मोबाईल में टाईप करें : cf 270930 टाईप करें 56789
नम्बर पर : S.M.S. करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा । नोंट : cf टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि मार्च-२०१४

रु. १,००,०००/-	प.भ. भीमजी देवजी टांक मंजुलाबहन भीमजी टांक बोटका गाँव।
रु. १,००,०००/-	प.भ. पूनमभाई मगनभाई पटेल नवरंगपुरा (प.पू. बड़े महाराजश्री की प्रेरणा से)
रु. ६०,०००/-	ब्रह्मभट्ट रुपेश - अमेरिका
रु. ५१,०००/-	अ.नि. प.भ. नंदलालभाई कोठारी, अमदावाद (भालजी साहब मंडळ) कृते जशवंतभाई अमृतलाल जोशी)
रु. ५०,०००/-	प.भ. प्रीतेशभाई परमार - केनेडा
रु. ३०,०००/-	प.भ. श्वेतागौरी परमार (न्युयोर्क वाला)
रु. २५,०००/-	प.भ. हरजीभाई नानजी हालाई - भुज
रु. २५,०००/-	श्रीहरि ट्रेडर्स - वडोदरा कृते लखमशीभाई मावजीभाई भावाणी।
रु. २५,०००/-	प.भ. शालिन अरविंदभाई दोंगा - बापूनगर
रु. १९,८१५/-	श्री धर्मकुलकी चरण भेंट
रु. ११,०००/-	प.भ. डॉ. पी. एम. पटेल माणसा - नरनारायण होस्पिटल चि. पराग तथा रिनाना लग्न प्रसंग पर भेंट
रु. ११,०००/-	सां.यो. कान्ता बहन (नारणपर-कच्छ:
रु. १०,००१/-	प.भ. रजीवनदास करशनभाई पटेल - अमदावाद
रु. ७,०००/-	एक हरिभक्त - अमदावाद
रु. ५,५००/-	श्री सोनी राजा (कृते पू. बड़ीबहन) अमदावाद
रु. ५,५००/-	श्रीरुपलराजा (कृते पू. बड़ीबहन) अमदावाद
रु. ५,१००/-	प.भ. रणछोडभाई एम. पटेल (घाटलोडीया)
रु. ५,०००/-	प.भ. प्रणव रजनीकांत त्रिवेदी - वेजलपुर (नूतन मकान के उस प्रसंग पर)
रु. ५,०००/-	प.भ. विमल प्रवीणचंद्र पारेख तथा गौतमभाई खुशालभाई महेता - अमदावाद-मुंबई।

सूचना : श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रात: ११-३० को आरती उतारते हैं।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (मार्च-२०१४)

ता. ३-३-१४	म्युजियम का तृतीय वार्षिक उत्सव - मुख्य यजमान प.भ. चिमनलाल मूलचंदभाई भावसार परिवार कृते रश्मिकांतभाई भावसार, रसोई के यजमान - अ.नि. चंपाबहन गंगारामभाई कृते प.भ. डॉ. गंगारामभाई पटेल
ता. १०-३-१४	प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाजी।
ता. १२-३-१४	श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन
ता. १७-३-१४	कच्छ श्री स्वा. मंदिर इस्ट लंडन
ता. २३-३-१४	श्री स्वामिनारायण मंदिर पंचवटी - कलोल प.पू. आचार्य महाराजश्री के ४२ वें प्रागट्योत्सव के निमित्त

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

श्रीहरि का अलौकिक ऐश्वर्य

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

उत्सव अनेकों प्रकार से मनाया जाता है। कितनी बार उत्सवों की पूर्व तैयारी होती है। कितनी बार तो अचानक उत्सव की तैयारी होने लगती है। आज का उत्सव अलौकिक अचानक मनाया गया।

प्रथमवार भगवान श्री स्वामिनारायण विसनगर पधारे। हरि भक्त वाद्य यन्त्रो से उनका स्वागत किये। श्रीजी महाराजने कहा कि अभी हमें नगर में प्रवेश नहीं करना है। हे महाराज ! आप ऐसा क्यों कह रहे हैं। देखिये यहाँ क्या हो रहा है ? एक उत्सव यहाँ गांव के बाहर होने वाला है। यह उत्सव सम्पन्न हो जाय बाद में हम शहर में प्रवेश करेंगे। महाराज कौन सा उत्सव ? महाराजने कहा कि आपलोग देखते रहिये।

विसनगर के बाहर पिंडोरिया तालाब के किनारे आम्र वृक्ष के नीचे महाराज विराजमान हो गये। जहाँ-जहाँ महाराज बिराजमान होते वहाँ-वहाँ स्मारक है। सन्त-भक्त सभी बैठ गये। गाँव में शोभाराम को विषर मिली, जैसा नाम वैसा गुण ? जो भजन करे, जो भक्ति न करे, जो सेवा न करे, जो सद्‌गुण विना का है। वह मात्र शोभा के लिये ही होता है। उस में कुछ होता ही नहीं। कितने बाजार में चका चौंधकर देने वाले प्लास्टिक के फूल होते हैं, फल होते हैं। केला, आम, सन्तरा, टमाटर ये सभी शोभामात्र के लिये होते हैं। इन का उपयोग खाने में होता है क्या ? ऐसे शोभाराम गाँव के किसी काम में आनेवाले आ रहे हैं। इस लिये दुष्ट युवानों को ललकारा। समाज में प्राप्त ऐसे लोग भी होते हैं। ५०-६० जितने युवानों को तैयार किया और सभी से कहा कि स्वामिनारायण गाँव के बाहर तालाब के किनारे बैठे हैं। चलो तूफान मचाया जाय। मारमारी किया जाय। जो सामने आये उसे मारा जाय। देखना ही नहीं कौन सामने हैं।

स्वामिनारायण हो तो भी डरने की जरुरत नहीं। मैं बैठा हूँ। विसनगर में अपना राज्य है। ५०-६० लोगों को लालच दिया। तुम सभी स्वामिनारायण के साधुवों को भगा दो तो पैसा दूंगा। जो मांगोगे वह दूंगा। अब क्या, सभी ललकारते हुए सामने से आये।

श्रीहरि शांति से बैठे थे। भक्तों का ध्यान उस तरफ गया। अरे, यह तो सुबा के द्वारा भेजे गये तूंफानी हैं। महाराज ने कहा कि आप लोग शांति से बैठे रहिये, ये सभी आप सभी को खुश करने के लिये आ रहे हैं। महाराज ? ये सभी बड़े उद्धत हैं। इनका विश्वास नहीं करना चाहिये। हम लोग इनका सामना करेंगे। हमारे देखते हमारे इष्टदेव का तथा हमारे संतो का अपमान हो और हम बैठे रहें ?

हे भक्तों ! आप लोग शांति रखिये। ये हमारा अपमान करे बाद में आप लोग खड़े होइयेगा। ये सभी आपलोगों को खुश करने आ रहे है।

५०-६० का टोला गाली देते हुए वहाँ पहुँच आया। श्रीहरि बैठे रहे, भक्त व्याकुल हो रहे थे। ५०-६० का टोला उस तालाब के किनारे आकर वृक्षों पर लाठी से प्रहार करने लगे, उत्तर गुजरात की भाषा में जैसे-तैसे शब्द बोलने लगे। अप शब्द बोलने लगे, गाली का उच्चारण करने लगे। महाराज सभी की दृष्टि का परिवर्तन कर दिये, उन्हे वहाँ के वृक्ष के पत्तों पत्तों में स्वामिनारायण का दर्शन होने लगा। महाराजने कहा कि देखो मैने कहा था कि आप सभी के स्वागत में ये सभी आ रहे हैं। उन सभी के मुख से वहीं शब्द निकल रहा हैं, देखो ये स्वामिनारायण के साधु हैं, देखो वे स्वामिनारायण हैं। ये सब भाग जांय, पकड़लो। महाराज कहते हैं कि जैस् नटलीला करते हैं, जादूगर जादूगरी दिखाते हैं ठीक इसी तरह से ये सभी अपना कर्तव्य दिखा रहे हैं। ये सभी युवान आप सभी को खुश करने का खेल कर रहे हैं।

भगवान स्वामिनारायण सभी की दृष्टि में परिवर्तन कर दिये थे। जिससे वृक्ष-वृक्ष में भगवान दिखाई देने लगे थे। आधा घंटा तक यह प्रयोगचला। बाद में सभी थक गये, कारण यह कि वृक्षों में थक कर वे सभी वापस सुबा के पास जाकर कहने लगे कि हम स्वामिनारायण को तथा उनके साधुओं को खूब मारे हैं। वे लोग १५ दिन तक खड़े नहीं हो पायेंगे।

जब तक बात कर रहे थे तब तक वहाँ पर जय-जयकार के साथ स्वामिनारायण भगवान की नगर यात्रा आ पहुँची। सुबा के देखते-देखते पूरे विसनगर में

स्वामिनारायण भगवान की जय-जयकार होने लगी।

जहाँ भगवान है वहाँ पर सदा सुख ही रहता है। सदा आनंद रहता है। भगवान के चरण में बैठने वालों को कोई भय नहीं रहता। यह बात आज विसनगर के सभी भक्तों को समझ में आ रही थी। इसलिये सदा सावधान होकर भगवान की शरण में रहना चाहिये, उनसे दूर नहीं जाना चाहिये। वे कभी भी अपने भक्त का अनिष्ठ नहीं होने देते।

●

सर्व कर्ता श्रीहरि

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

एकबार श्रीहरि भीमनाथ महादेव के मंदिर की तरफ जा रहे थे। उनके साथमें भगुजी, सुराखाचर, सोमला खाचर, मूलजी शेठ, इत्यादि घुड सवार थे। उसी समय भीमनाथ से थोड़ादूर दो गाँव के बीच में कोई द्वेषी महाराज को जान से मारने के लिये २०० आदमियों को भेजा था। महाराज के मारने का कारण यह था कि थोड़े समय पूर्व अलैया खाचर तथा उस द्वेषी के गुरु एक साथ मिल गये थे। वे सभी महाराज की निन्या करने लगे। उसी समय अलैयाने उसे लात से मार दिया। उसे नीचे फेंक दिया। इस बात की खबर उसके शिष्यों को हुई कि अलैया खाचर हमारे गुरु को लात मार दिया है इसलिये हम भी उसके गुरु को मारने जाते है। उसी विचार से २०० आदमियों के साथ महाराज का रास्ता रोका दिया है।

श्रीजी महाराज सात घुड सवारों के साथ उस बगड़ा में से होकर जा रहे थे। उसी समय हथियारधारी २०० जितने लोगों को देखकर भगुजीने कहा कि हे महाराज ? हम सुने हैं कि कोई दुर्जन २०० आदमियों के साथ आपको परेशान करने के लिये रखा है, लेकिन उनके सामने हम लोग तो सातजन ही हैं। भगुजी की बात सुनकर महाराज हंसने लगे। महाराजने कहा कि इसमें डरने की जरुरत नहीं है। इतने में १०० जितने हथियारधारी नवयुवानसामने से आते हुये भगुजी ने देखा। भगुजीने सिवाय वाकी छ लोगों को शस्त्रधारी दिखाई नहीं दिये। लेकिन आवाज सभी को सुनाई देती थी। शस्त्रों की आवाज सुनाई देती थी। आते जाते सभी के मारो-काटो की आवजा सुनाई देती . वे ही उन दुर्जनो को भगा दिया। वे इस तरह भाग रहे थे कि उनके हाथों से अस्त्र-शास्त्र गिर रहे थे। शरीर का भान ही नहीं रह गया था। यह सब देखकर महाराज मुख पर रुमाल रखकर हंसने लगे। सभी से पूछ रहे थे कि ये सभी क्यों भाग रहे हैं।

बाद में श्रीजी महाराज भीमनाथ महादेव में पधारे। उन महात्मा की जगत में रुके। महादेव का दर्शन करके ५/- रुपये महाराज को भेंट में रखे। महादेव मंदिर के महात्माने महाराज के रहने-खाने की व्यवस्था कर दी।

इधर दुर्जन आदमियों के जो शस्त्रधारी थे वे एकत्र होकर विचार करने लगे कि स्वामिनारायण के साथ एक हजार जो हम लोगो को खदेड़ रहे थे वे सब कहाँ चले गये। वे किस देश से आये थे। वे सभी गाँव में कहां उतरे हैं ? इतने लोग छोटे से गाँव में कहाँ रहेगे। देखो तो सही ? उस में से दोजन गाँव में आकर देखने लगे तो गाँव के लोगों ने बताया कि यहाँ तो कोई नहीं आया था। वे दोजन पुनः महादेव मंदिर में जाकर पूछे कि स्वामिनारायण कहाँ रुके हैं ? उनके साथ एक हजार सिपाही थे वे कहाँ गये। महात्माजीने कहा कि स्वामिनारायण तो यहीं है और उनके साथ सात घुड सवार है। इनके साथ और कोई नहीं है। उन दोनो ने कहा ऐसा नहीं है, मैं अपनी आँखो से देखा हूँ। उनके साथ एक हजार सैनिक थे, वे हथियार धारी कहाँ चले गये ? महाराज से पूछे तो उन्होंने भी मनाकर दिया। मेरे साथ कोई नहीं है ? हम मात्र सातजन ही है। महात्माजी के विशेष आग्रह पर महाराजने कहा कि हो सकता है भीमनाथ महादेवने ही कोई चमत्कार दिया होगा। उन्हीं के प्रभाव से हजार व्यक्ति दिखाई दिये होंगे। वे दोनो ने विचार किया कि स्वामिनारायण के साथ तो केवल सात ही लोग हैं। अब हमे सुसज्ज हो जाना चाहिये।

जब स्वामिनारायण भीमनाथ महादेव के मंदिर से बाहर आयेगें तो इसे पकड़ लेगे। जब दूसरे दिन महाराज वापस आये २०० साटोला पुनः महाराज को घेर लिया। उन सभी को पुनः वे एक हजार सैनिकों का समुदाय दिखाई देने लगा। भयंकर आकार वालों को देखकर वे सब भागने लगे। महाराज, मूलजी शेठ, सुरा खाचर, सभी हजारों की आवाज, शस्त्रों की आवाज सुनाई दी। सुरा खाचर ने पूछा कि हे महाराज ! दुर्जन के आदमी विना कुछ किये क्यों भाग रहे थे। लेकिन हजारों की आवाज तो अवश्य सुनाई दे रही थी। महाराजने कहा कि भगुजी को पूछिये। भगुजीने कहा, ''तब भगुजीने सभी से बात की। जो सुन कर सभी प्रसन्न हो गये।''

लोक में कहवात है कि, ''धार्यु धणीनुं थाय'' धणीयानी परमात्मा, जिसे भगवान का आश्रय होता है उसका कोई काल भी छू नही सकता तो फिर परमात्मा के आगे ऐसे दुर्जन पामर जीव की क्या हिम्मत जो भगवान का कुछ बिगाड़ सके। इसीलिए भगवान का दृढ़ आश्रय रखकर भजन करने पर भगवान सदैव हमारी सहायता करते हैं।

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से
"सत्संग की प्राप्ति के बाद भी पुरुषार्थ करना पड़ता है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम कथा करते रहते हैं ,इसके पीछे क्या कारण है ? अपने दोषो को दूर करना । भक्ति तो होती है परंतु अपने भीतर के दोष दूर नहीं होते, इसलिये कि ? हम अपने भीतर के दोष को स्वभाव बना दिये हैं । अपने भीतर दोष को रहने को स्थान दे दिये हैं । दोषों को अपने भीतर रहने को कब जगह मिलती है । अपने भीतर वह क्यों टिका रहता है । हम जानते हैं कि यह हमारी भूल है । फिर भी उस भूल का पश्चाताप नहीं होता । बल्कि वारवार भूल करते रहते हैं । वही भूल दोष में परिवर्तित हो जाती है । बाद में वही दोष स्वभाव बनजाता है ।

जिस तरह सृष्टि उत्पन्न होती है तथा विनाश भी उसी का होता है । इसी तरह अपने भीतर के दोष भी स्थायी नही रहते, उसका भी नाश हो सकता है । विषय-वासना, राग-द्रेष, इर्ष्या इत्यादि सदा अपने भीतर नहीं रहती । अनित्य हैं । फिर भी हम उन्हें नित्य बना देते हैं । यदि नित्य होते तो आप सभी इस सत्संग में शांति से कैसे बैठते ? सभी के भीतर सत्वगुण का प्राधान्य होगा । सभी को शांति का अनुभव हो रहा है न ? ये सभी दोष स्थायी होते तो अभी भी होने चाहिये । यदि होते तो शांति नही मिलती । हमें यह खबर है कि ये सभी दोष है, फिर भी उसे स्वीकार करके अपने भीतर स्थान देते हैं । जिससे वह पुष्ट हो जाता है । अपने भीतर रहे दोषों को पोषण देने से वे घर करजाते हैं, निकलने का नाम नहीं लेते । हम अपने घर में कुत्ता पालते हैं और उसका ध्यान भी रखते हैं । सिंह-वाघ को क्या अपने घर में रखते हैं ? क्योंकि हमे यह कबर है कि हमें वह नुक्शान पहुंचा सकता है । इसी तरह अपने भीतर अच्छे-बुरे दोनो विचार होते हैं। जिन्हे हम अधिक महत्व देते हैं वे पुष्ट होते हैं । देह को अधिक महत्व देते हैं तो वह देह पुष्ट होता है । हमें अपने जीवन को किस दिशा में ले जाना है । यह हमें निश्चित करता है । अपनी शरीर कचरा भरने का साधन नहीं है । परंतु परमात्मा को प्राप्त करने का साधन है । अपने भीतर गुण दोष है उसकी जानकारी कैसे प्राप्त होगी । हमारे आत्मा में ही परमात्मा का वास है । वही समांतर सत्य है । उनके ज्ञान और प्रकाश से जानकारी प्राप्त होती है । तब ज्ञान और प्रकाश कब जागृत होता है ? सत्संग के माध्यम से हमारे आत्मा पर मैल स्वरुपी आवरण दूर होता है । तब जागृति आती है । हमें जब एहसास हो की यह हमारी भूल है तब उसका पछतावा करना चाहिये कि और पुनः उसका पुनरावर्तन नहीं करने का निश्चय करना चाहिए । जिस प्रकार बार-बार भूल होती है उसी प्रकार उसमें छिपे दोष और पछतावे कोदूर करने हेतु निश्चय करना चाहिए । उसे अपना स्वभाव बना लेना चाहिए । अच्छा साथ प्राप्त होना ही भगवान की कृपा है । इसीलिए सत्संग प्राप्त होने के बाद रात-दिन अभ्यास करना चाहिए । इसीलिए पुरुषार्थ तो करना चाहिए । क्योंकि पुरुषार्थ किये बिना तो भगवान भी सहायता नहीं करते हैं ।

जिस प्रकार इस संसार को और अपने शरीर को शाश्वत मान लेते हैं । उसी प्रकार हमारे गुण-दोषो को भी शाश्वत मान लेते हैं । उत्पन्न तथा नष्ट न हो सके ऐसी दो ही वस्तुए है ''आत्मा और परमात्मा'' और दोही चीज है जो नष्ट होने वाली है । ''संसार और शरीर'' । आत्मा और शरीर का संबंधएक साथ नही है । आत्मा परमात्मा का अंश है । शरीर संसार का अंश है । इसीलिए संसार का रिश्ता शरीर से है इसीलिए शरीर को संसार की सेवा में लगा देना चाहिए और आत्मा का परमात्मा भी सेवा में समर्पित कर देने हेतु शरीर भी एक माध्यम ही है । जिसके द्वारा परमात्मा की प्राप्ति हो सकती है । शरीर की भी सेवा करनी चाहिए शरीर को स्वच्छ रखना चाहिए । शरीर द्वारा परमात्मा को प्राप्त करना है । परमात्मा को प्राप्त करने का साधन ही पवित्र न हो तो साध्य की प्राप्ति नहीं हो सकती । शरीर के प्रति आसक्ति नहीं रखनी चाहिए । वही मोक्ष की सबसे बड़ी बादक शत्रु है । शरीर से परमात्मा को जानने की आशक्ति अर्थात् देह के प्रति आकर्षण को शरीर की आसक्ति जानना चाहिए तथा संसार के प्रति आकर्षण को संसार की आसक्ति जानना तथा भगवान के प्रति आकर्षण को भक्ति मानते है, आत्मा से परमात्मा तक जुड़ना है । संसार नाशवंत है । शरीर भी नाशवंत है । जो सत्य है उसके साथ जुडना है ।

•

भगवान भक्ति का क्या अर्थ है

- सां.यो. कुंदनबाई गुरु सां.यो. कंचनबाई (मेड़ा)

भगवान की भक्ति करने से प्रारब्धका भोग करने में बड़ी राहत होती है वह हकीकत है । शास्त्रो तथा संतगण उसके साक्षी रुप है । परंतु भगवान की भक्ति का क्या अर्थ है । वह समझना आवश्यक है ।

भगवान की भक्ति अर्थात् भगवान की आज्ञा का पालन

करना है । हम सभी भक्ति करते है, नाम लेते हैं । गुणगान करते है, परंतु उनकी आज्ञा का पालन नही करते, हमने उनकी भक्ति की ही नहीं कहलायेगी ।

धर्म से भगवान की आज्ञा के अनुसार वर्तन नही करना और उनका नाम स्मरण करना, गुणगान करना, तिलक करना, मंदिर जाना इसी को ही भक्ति कहते है तो यह भक्ति नहीं है । भगवानने भक्त के लक्षणो का वर्णन अनेक शास्त्रों में किया है । उसमे कही नही लिखा है कि जो चोटी या दाढी रखे गया भगवा वस्त्र पहनेगा वही भक्त है । भगवानने भक्त के लक्षण स्वयं अपने मुख से गीता में कहे है, ''जो सर्व जीवप्राणी मात्र में द्वेष भाव नहीं देखता, बिना स्वार्थ सभी को प्रेम करता है, किसी हेतु विना दयाभाव रखने वाला, ममत्व, अहंकार से शून्य, सुख-दुःख की प्राप्ति में समभाव तथा क्षमाशील अर्थात् अपराधकराने वाले को भी अभय प्रदान करने वाला तथा जो योगी निरंतर संतुष्टहै, मन-इन्द्रियों सहित शरीर को वश में रखने वाला है तथा मुझमें दृढ निश्चय रखने वाला तथा मन-बुद्धि मुझमें समर्पित किये हुए है वही मेरा भक्त मुझे प्रिय है ।''

प्रिय भक्तों ! इसमें का एक भी लक्षण यदि हमारे अंदर नही है तो हम अपने आपको भक्त मान सकते हैं ! नहीं । और भगवान के भी प्रिय नहीं हो सकते । उदाहरण स्वरुप मैं या आप मे से घोषित करे कि मैं बिरला शेठ का पुत्र हूँ तो क्या इससे मुझे उनकी सम्पति में से हिस्सा मिल जायेगा ? नहीं । उसी प्रकार स्वयं भगवान उठकर कहे कि यह मेरा प्रिय भक्त है ।(यो में भक्तः सः मे प्रियः) हम यदि प्रभु के द्वारा कहे लक्षण को धारण करते हैं तो हि हम भगवान के प्रिय भक्त होंगे । नरसिंह मेहता, मीराबाई, भक्त प्रहलाद, अगत्राई के पर्वतभाई, लींबडी के मूलजी शेठ जैसे आदि भक्तों की तरह हमें भी भगवान प्रारब्धके भोगको में सहायता कर सकते । वे जगत के पिता है । दया के सागर है । हमने पिता की आज्ञा का पालन न करे और उनकी आज्ञा की अवहेलना करके उँचाई से बार-बार कूदने पर यदि पैर टूट जाये तो और हमारे पिता हमें हाड़वैद्य के वहाँ ले जाये, वहाँ जाने के लिए रिक्षा का भाड़ा दे, हाडवैद्य की कीस दे, घर लाकर सेवा करे, पैर का सेक करे । दवा-दे, सबरत दे, आदि खर्चा करके सेवा करे तथा उद्वेग न हो ऐसे वचन बोले, परंतु हम उनके पास ऐसी मांग करे कि मेरे पाँव में दर्द हो रहा है वह पीड़ा आप ले लीजिए जो, पिता वह पीडा़ नहीं ले सकते, वह पीडा़ का भोग तो हमें ही भोगना है, उसी प्रकार मनुष्य को भगवान की आज्ञा का उलंघन करने के कारण कुकर्म के प्रारब्धको पकने बाद भोगना ही पड़ता है । उस में कर्म के कानून में जगतपिता हस्तक्षेप नहीं करते हैं ।

प्रिय भक्तों ! हरिनाम तो संसार चक्र में फंसे हुए जीव को भवसागर में से मुक्ति प्रदान करवाता है । ऐसा संतगण कहते है । जिससे जीव का बड़े से बड़ा रोग जिसे भवरोग कहते हैं वो मिट् जाता है । यह बात सही है, परंतु हरिनाम आयुर्वेदिक दवा जैसी है, एलोवैदिक दवा करने पर नियम रखने की आवश्यकता नहीं है । इन्जेकशन लेने होते है । गोलीयाँ खानी होती है, साथ ही तेल-मिर्च, खटाई भी खा सकते है । परंतु आयुर्वेदिक दवाइयों में बहुत नियम होते हैं । यदि नियम में चूक हो तो दवाई की असर नहीं होगी, उल्टी हो जायेगी । एलोवैदिक दवा दर्द को दबा देती है परंतु रोग को जड़मूल से खत्म नहीं करती । आयुर्वेदिक दवा कड़क नियम के साथ लीजाय तो धीरे-धीरे रोग भी जड मूल से खत्म हो जाता है । हरिनाम भी ऐसा ही अमोधआयुर्वेदिक औषधिजैसा है । जीव के भवरोग का जडमूल में से नाश करता है । जीव को फिर से प्रारब्धका भोग करने हेतु जन्म-मरण के चक्कर में नही पड़ने देता । मोक्ष प्राप्ति हेतु कड़क नियम का पालन करना होगा । सत्शास्त्रो में संतो ने ऐसा नियमों की सूची दी है । उदाहरण स्वरुप, असत्य नही बोलना, किसी की निंदा नही करनी, किसी प्रकार व्यसन नही करना । अपनी प्रशंसा नही करना, परधन को पथ्थर सामान समझना, परस्त्री को माता समान मानकर उन पर कभी कुदृष्टि नहीं करनी चाहिए, में ही पूज्य हूँ ऐसा अभिमान नही करना, कभी किसी की ईर्ष्या नही करनी चाहिए । आदि प्रकार के नियम है ।

यदि इन सभी नियम का पालन न करें समग्र जीवन हरिनाम लेते रहे या लिखते रहे तो भी सबकुछ निरर्थक है, इस कारण मनुष्य में मिथ्याचार भी आ जाता है, नुकसान होता है, शास्त्रो में संतो ने एक और नियम बताया है,

''हुं हरिनो हरि छे यम रक्षक,
एह भरोसो जाय नहि,
जे हरि करशे ते मम हितनुं,
ए निश्चय बदलाय नही''

प्यारे भक्तों ! भगवान को प्रिय ऐसे भगवान के भक्त के लक्षण हमारे में आये तथा हम भगवान के प्रिय बन पाये ऐसी इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान के चरणो में तथा हमारे स्त्री भक्तो के प्रिय गुरुजी प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपगादीवालाश्री के चरणों में प्रार्थना ।

•

भक्त के प्रकार

– सां.यो. कोकिलाबाई (सुरेन्द्रनगर)

श्रीमद् भगवत् गीता में श्री कृष्ण भगवान ने अर्जुन को

उपदेश देते हुए कहा था कि, ''भक्त चार प्रकार के होते है। (१) आर्त भक्त (२) जीज्ञासु भक्त (३) अर्थार्थी भक्त (४) ज्ञानी भक्त। ये चार प्रकार के पुण्यशाली भक्त मेरे शरण में आते हैं। अर्थात् मेरी भजन करते हैं। दूसरे आसुरी प्रकृति के मनुष्य मेरे शरण में नही आते है। इसीलिए मैं उन्हें आसुरी योनि में भेजता हूँ।(जन्म देता हूँ) उनमें ज्ञानी भक्त ही मेरी आत्मा है। ऐसा मैं मानता हूँ। क्योंकि उसे किसी भी प्रकार की स्पृहा नही है। निष्काम भाव से मेरी भक्ति करते है।''

(१) "आर्त भक्त" : दु:खी भक्त प्रभु के शरण में जाते हैं। तथा प्रभु का भजन करते है। आशा रखते हैं। दु:ख के निवारण के हेतु प्रभु की करुणा भाव से याद करता है वही आर्त भक्त है। कितने ही जन्मो का पुण्य प्रगट होता है तब भगवान को भगवान के भक्तों का सुयोग होता है। भगवान का भजन करना आसान नहीं है। भगवान को सर्वस्व सौंपना पड़ता है। भगवान पर श्रद्धा रखनी, भगवानमय बन जाना ही भक्ति की पराकाष्ठा है। दूसरे जीवों को भक्ति में रस नहीं होता। भक्ति रहित को मायिक जीव कहते हैं। भक्तिवान को पुण्यशाली जीव कहते हैं। जैसे जैसे पुण्य की वृद्धि होती है ज्ञान की वृद्धि होती है। माया से मुक्ति होती है। और भगवान की भक्ति का आरंभ होता है। और मुक्ति द्वार खुल जाते हैं। इसीलिए प्रभु का दर्शन हो वही जीवन का अंतिम ध्येय है। मुक्ति मिलने पर आधि-व्यांधि-उपाधिटल जाती है। सुख-शांति की प्राप्ति होती है। इसीलिए निष्काम भक्ति करनी चाहिए तो ही अक्षरधाम में रहने मिलेगा। परंतु सकाम भक्ति करने पर दु:ख दूर होने पर सुख की आशा रखने से उसके फल स्वरुप सुख प्राप्ति होती है। परंतु मुक्ति नही मिलती। सुख का भोग करने से पुण्य कम होता है। इसलिए पुन: भक्ति करनी चाहिए। यह क्रम सदैव चलता रहता है। द्रोपदी, गजराज, सुधन्या आदिने दु:ख निवारण हेतु प्रभु को याद किया था। परंतु स्थायी दिव्य सुख नही प्राप्त हुआ। इसीलिए सकाम भक्त भगवान को प्रिय नहीं है।

(२) जीज्ञासुं भक्त : जो रात्रि-दिवस प्रभु को खोजने में लगा है वही जिज्ञासु भक्त है। साधना करने वाले ऋषि, मुनि, परिक्षित राजा आदि जिज्ञासु भक्त को आत्मा-परमात्मा के ज्ञान विषय की जानकारी की इच्छा होती है। भगवान तथा भगवान के धाम के निष्ठा में जानने की ईच्छा हो ऐसा सुविचार करनेवाला पुण्यशाली माना जाता है। यह सब ज्ञान प्राप्त कर जब तक वैराग्य न मिले तब तक भगवान की भक्ति से सुख मिलेगी। परंतु मुक्ति नहीं मिलेगी। इसीलिए वैराग्य का अंग रखना चाहिए। आध्यात्म ज्ञान प्राप्त करके भक्तिमय जीवन को बनाकर प्रभु को प्रसन्न करके मुक्ति प्राप्त करनी चाहिए।

(३) अर्थार्थी भक्त : जो शरीर सुख स्त्री सुख, पुत्र सुख, राज्य सुख तथा दूसरे सांसारिक पदार्थो की प्राप्ति के लिए प्रभु को याद करता है वह अर्थार्थी भक्त कहलाता है। जिस प्रकार ध्रुव, विभीषण, सुग्रीव आदि धन की इच्छावाले भक्त भगवान का भजन करत है वे भगवान को प्रिय है। क्योंकि पुण्य एकत्र होने पर ही तो भगवान की भजन कर सकते हैं। भगवान को प्रसन्न कर सकते हैं। भगवान प्रसन्न होने पर धन, संपत्ति सब कुछ देते हैं। परंतु पुण्य समाप्त होने पर पुन: पूर्व प्रक्रिया आरंभ हो जाती है। परंतु जो धन, संपत्ति का सदुपयोग किया जाय, पर माथे तथा प्रभु की प्रसन्नता हेतु खर्च किया जाय तथा सार्वजनिक उपयोगी कार्यो में किया जाय तो पुण्य के प्रताप से अधिक दुख प्राप्त होकर मोक्ष प्राप्ति होती है। श्रीकृष्ण भगवानने गीता में कहा है कि, भगवान के द्वारा प्रदान किया हुआ भगवान के लिए ही उपयोग किया जाय और उसके बाद उसका भोग करे तो वह स्वयं निर्गुण कहा जायेगा। निर्गुण संपत्ति का उपभोग करने से भक्ति-वृद्धि होती है। भगवान की प्राप्ति होती है। परंतु भगवान द्वारा दिया गया सिर्फ अपने हेतु उपयोग किया जाय तो वह भगवान का चोर है। श्री स्वामिनारायण भगवानने शिक्षापत्री में लिखा है कि, अपनी आवक का दशवाँ भाग या बीसवाँ भाग अर्पण करके ही निर्गुण बन सकते हैं। तथा ऐसी संपत्ति का उपयोग करने से पापके भागी नहीं होते हैं। तथा बुद्धि भ्रष्ट नहीं होती। संतोष रखना चाहिए। उसी में सुख की प्राप्ति होती है। असंतोष से तो दु:ख होता है क्लेश - लोभ की वृद्धि होती है। उपाधिहोती है। इसीलिए संतोष रखना चाहिए। धर्मदान, पुण्यदान द्वारा उसका सदुपयोग करना चाहिए। ऐशा भक्त भगवान को प्रिय है। इसीलिए भगवान के प्रिय बनने हेतु अपनी कमाई का १० प्रतिशत या २० प्रतिशत प्रभु को अर्पण करने से सर्वजीव हितावह कहा जायेगा।

(४) ज्ञानी भक्त : ज्ञानी भक्त को आत्मा-परमात्मा का ज्ञान होता है। सत्य-असत्य का ज्ञान होता है। माया में मोहित नही होता। संसार से विरक्त होता है। महात्म्य, ज्ञान, वैराग्य, युक्त तथा धर्मसहित भक्ति करता है। निष्काम भाव से भक्ति करने वाला प्रभुमय होता है। तन-मन-धन प्रभु को अर्पण कर देता है। स्वामी सेवक भाव रखकर प्रभु की सेवा पूजा करता है। प्रभु की आज्ञा में रहता है। सदाचार का पालन करता है। जीवन का जितना हो सके समस्त समय प्रभु की भक्ति में व्यतीत करता है। संसार में प्रभु के प्रतिनिधिके रुप में अपना फर्ज निभाता है। स्वयं गुणातीत बनकर रहता है। ज्ञानी में दया, क्षमा, परोपकार, सहनशीलता, सुशीलता, शीतल

विवेक, संतोष आदि सद्‌गुण होते हैं। ऐसे भक्त आत्म निवेदी भक्त है। ऐसे भक्तों की दिव्य शक्ति को आत्म निवेदी भक्त कहते हैं।

ज्ञान जैसा और कुछ भी उत्तम नहीं है। उसमें आध्यात्मिक ज्ञान तो अति उत्तम है। सबसे उत्तम निष्काम भक्ति है। निष्काम भक्ति करने वाला ही उत्तम ज्ञानी भक्त बन सकता है। श्री स्वामिनारायण भगवान ने जड़ भरत, सनतकुमार, नारद जैसे की निष्काम भक्ति की प्रशंसा की है। मीराबाई, नरसिंह महेता, तुकाराम, तुलसीदास, ज्ञानेश्वर, मांधवाचार्य, शंकराचार्य इत्यादि अनेक संतगण हो गये है। वे जन्म से ही भक्त थे। अपने हित हेतु कोई भी मनुष्य मेरी भक्ति करता है लेकिन ज्ञानी पर ही मैं प्रेम रखता हूँ।

द्रोपदी को वस्त्र हरण का दुःख आया तो भगवान को आर्तनाद से पुकारा भगवानने आकर वस्त्रों के चीर की पूर्ति करके द्रोपदी की लाज रखी। इसीलिए द्रोपदी आर्तभक्त है। ध्रुवने भगवान कैसे है कहाँ है कैसे प्राप्त किया जा सकता है वह जानने की जिज्ञासा हुई तो वे वन में गये। नारदजी की आज्ञा अनुसार तप किया भगवान को प्राप्त किया तो वे जिज्ञासु भक्त कहे गये। प्रहलादजीने गर्भावस्था में नारदजी द्वारा नारायण संबंधी ज्ञान प्राप्त किया तो जन्म के बाद नारायण के यथार्थि भक्त हुए इसीलिए वे ज्ञानी भक्त थे। स्वामिनारायण संप्रदाय में तथा सत्संग में त्यागी तथा गृही वर्गमें ऐसे निष्काम भक्तों की संख्या में वृद्धि हो ऐसी श्रीहरि के चरणों में प्रार्थना।

•

पाखंड का परदा फटा

– पटेल लाभुबहन मनुभाई (कुंडाल, ता. कड़ी)

श्रीजी महाराज में श्रद्धा रखने वाले भक्त के समक्ष प्रभु स्वयं उपस्थित होते है। अंधश्रद्धालु – अनेक देवदेवियों के पूजक, ठग या पाखंडी लोग प्रभु को अप्रिय है।

एक दिन मानकुवा गाँव में प्रभु विराजमान थे। भक्तवृंद प्रभु के उपदेश का अमृतपान कर रहे थे। इस मानकुवा गाँव में एक ब्राह्मण बाई थी। उसका नाम डाहीबाई था। डाहीबाई श्रीहरि के पास पहुँचकर उनके चरण स्पर्श करके बोली ''महाराज, मेरे घर भोजन करने पधारिये।'' श्रीजी महाराज तो अंतर्यामी थे सब कुछ जानते थे। डाही बाई श्रद्धालु थी, परंतु एक ही ईश्वर में श्रद्धा रखनेवाली नही थी। परंतु प्रभु ने आमंत्रण को त्वरित स्वीकार्य कर लिया।

दूसरे दिन श्रीजी महाराज डाहीबाई के वहाँ भोजन करने पधारे डाही बाईने ओसरी में भोजन के लिए आसन बिछाया पास में बड़ा सा कमरा था। श्रीजी महाराज की दृष्टि उस कमरे पर पड़ी। वह कमरा माटी और लकड़ी की मूर्तियो से बने देवी-देवताओ से भरा पड़ा था। इस कारण प्रभुने डाहीबाई से क्रोधावेश भाव मे कहा, ''हमें आपने अपने यहाँ भोजन करने हेतु क्यों आमंत्रित किया है ? हमारा यहाँ क्या काम ? आपके घर में तो अनेक भगवान का जमावड़ा है। हम ऐसे अविश्वासु, धर्म का दंभ करने वाले का भोजन ग्रहण नहीं करते हैं।

श्रीजी महाराज तो आसन से एकदम खड़े होकर अपने मुकाम की ओर चलने लगे। डाहीबाई के पति विप्रलवजी अधिक समझदार तथा एक ही ईश्वर में आस्थावाले थे। उन्हों ने प्रभु से विनती की ''हे महाराज, हम जैसे अज्ञानी, अबोध, के अंतर को जानने वाले हे सर्वज्ञ, हम पर कृपा करिये। भोजन हेतु हमारे आंगन में पधारे है और भोजन ग्रहण किए बिना क्यों जा रहे है। हमारा जीवन पाप से मुक्त नहीं हो पायेगा। कृपा करके भोजन ग्रहण करके जाइये।

श्रीहरिने कहा ''जिसे एक ही ईश्वर में दृढ विश्वास है और एक ही ईश्वर का शरण लेने की निश्चयता है, ऐसे भक्त ही मुझे प्रिय है। हृदय में धर्म के नाम पर धोखां करने की असद्‌वृत्ति से या पाखंड रुपी विषभरा हो ऐसे भक्तों के साथ हमारा साथ नहीं होता।

लवजी ब्राह्मणने अत्यंत व्यथित स्वर से प्रभु को कहा, ''हे श्रीहरि, आप की जो आज्ञा हो उस के अनुसार ही वर्तन करेंगे। हमारा ध्यान भटक गया था। अज्ञान के अंधकार में भटकने के कारण यह भूल हई। आज आपने हम पति-पत्नी को धर्म का सच्चा अर्थ समझाया है। प्रभु को प्राप्त करने का रास्ता बताया है।

श्रीहरिने कहा आपके मस्तक पर यह जो चोटी है उसे कटवा दीजिये प्रभु के भक्त होने का दिखावा करने की आवश्यकता नही है। धर्म के नाम पर मंत्र, जंत्र, नाटक, चेटक, पाखंड जैसा दिखावा नहीं होना चाहिए। घमंडी, धूर्त भक्त मुझे प्रिय नहीं।

अभी के अभी आपके कमरे में जितने भी देवी-देवतांओ के पूतले हैं उन्हें जल में समर्पित कर दीजिये। विप्र लवजीने प्रभु की आज्ञा का पालन किया।

अंतर में एक ही श्रीहरि की भक्ति की अडग श्रद्धा का निश्चय लिया। प्रभु आप ही है।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण म्युजियम का तृतीय स्थापना दिन सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण म्युजियम के तृतीय स्थापना दिन के निमित्त फाल्गुन शुक्ल-३ को दोपहर के बाद हाल नं. ८ में श्री नरनारायणदेव के समक्ष १६० हरिभक्तों के यजमान पद पर समूह महापूजा का आयोजन किया गया था । पूर्णाहुति में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे तथा श्री नरनारायणदेव का अभिषेक एवं आरती किये थे। होल नं. ११ में प्रासंगिक सभा में सर्व प्रथम अपने संप्रदाय के गायक कलाकार श्री जयेशभाई सोनी द्वारा कीर्तन किया गया था । श्रीहरि के दोनो अपर स्वरुप सभा में दर्शन देने पधारे थे । अनेकों स्थानों से संत-महंत पधारे थे । बहनों को दर्शन देने के लिये । प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी पधारी थी।

धर्मकुल पूजन तथा यजमानो के सन्मान के बाद म्युजियम द्वारा प्रकाशित तथा गोरधभाई वी. सीतापरा द्वारा लिखित ''श्रीहरि चरित्र'' (उत्तरार्ध) का विमोचन प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों किया गया था । बाद में संतो के मंगल उदबोधन के बाद प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए कहा कि कितने लोगों को श्री नरनारायणदेव अच्छे नहीं लगते । हम या महाराजश्री अच्छे नहीं लगते । उन्हें भी यह म्युजियम अच्छा लगता है। मुख्य यजमान अ.नि. चिमनलाल मूलचंदभाई भावसार - कृते रश्मिकांतभाई तथा रसोई के यजमान अ.नि. प.भ. चंपाबहन गंगारामभाई पटेल के स्मरणार्थ कृते डॉ. गंगारामभाईने लाभ लिया था । ३००० जितने भक्तजन भोजन का प्रसाद ग्रहण किये थे । म्युजियम के मेनेजर प.भ. दासभाई द्वारा सुंदर आयोजन किया गया था। (गोरधनभाई सीतापरा)

अमदावाद मंदिर में फूलदोलोत्सव

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवानने श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद में अनेकबार फूलदोलोत्सव किये और संत-भक्तों को सुखिया किये । इस उत्सव की परम्परा संप्रदाय में आज भी वैसी की वैसी चल रही है । फाल्गुन कृष्ण-१ को श्री नरनारयणदेव जयंती के प्रसंग पर अपने भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारे थे । सर्व प्रथम श्री नरनारायणदेव की आरती करके मंदिर में प्रसादी भूत विशाल चौक में भव्य शामियाने में संत भक्तों को पिचकारी के रंग से रंग रहे थे। हजारो भक्त आज लालजी महाराज के हाथों रंग का आनंद ले रहे थे । गुजरात के अनेकों इलेक्टोनिक्स मीडिया तथा अमदावाद के फोटो जर्नालीजमने इस भव्य प्रसंगको प्रत्यक्ष टीवी चेनल के माध्यस से सभी को आनंद प्लावित किया था । इसी तरह हवेली में प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी ने भी बहनों को रंग से रंग दी थी । इस तरह श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोलोत्सव बड़ी भव्यता के साथ मनाया गया । इस प्रसंग के यजमान पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से जय सियाराम ट्रस्ट प.भ. देवु भगत कृते श्री किशोरभाई आदिने लाभ लिया था । पू. महंत स्वामी के शिष्य मंडल को. जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, भक्ति स्वामी, श्री नरनारायणदेव के पुजारी ब्र. स्वामी राजेश्वरानंदजी, शा. नारायणमुनिदास, राम स्वामी इत्यादि संत-हरिभक्तों की सेवा सराहनीय थी ।

अमदावाद शहर के हजारो भक्तजन फूलदोलोत्सव का दर्शन करके धन्य हो गये थे ।

(शा. स्वा.नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुघड मूर्ति प्रतिष्ठा

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा. स्वामी श्रीहरिकेशवदासजी की प्रेरणा से तैयार नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर सुघड़ में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव ता. ४-३-१४ से ता. ६-३-१४ तक मनाया गया था ।

इस प्रसंग के अन्तर्गत श्रीमद् भागवत दशम स्कन्धका त्रिदिनात्मक पारायण, श्री हरियाग, ठाकुरजी की नगर यात्रा, इत्यादि कार्यक्रम मनाये गये थे । भगवान की नगरयात्रा में पूरा गाँव जुड़ गया था । कथा के वक्ता पद पर शा. स्वा. प्रेमप्रकाशदासजी (ईडर) थे । यज्ञ के मुख्य आचार्यश्री विष्णुप्रसाद त्रिवेदी - (नखत्राणा-कच्छ) ने यज्ञ विधिकराई थी ।

ता. ४-३-१४ को प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी तथा ता. ६-३-१४ को प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारकर बहनों

को दर्शन का सुख प्रदान की थी।

ता. ६-३-१४ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जब पधारे उस समय दिव्य स्वागत किया गया था। बाद में उन्हीं के वरद् हाथों मूर्ति की प्रतिष्ठा विधिकी गयी थी। बाद में यज्ञ की पूर्णाहुति करके मंदिर में अन्नकूट की आरती उतारे थे . सभा में कथा की पूर्णाहुति करके सभा में बिराजमान हुये थे। संतो की प्रेरणकवाणी के बाद प.पू. आचार्य महारजाश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । मुख्य यजमान प.भ. मफतभाई ईश्वरभाई पटेल परिवार ने प.पू. महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था।

इस प्रसंग पर जगदीश स्वामी (ईडर महंतश्री), शा. स्वा. हरिप्रियदास (गांधीनगर), को. सत्यसंकल्प स्वामी, वासुदेव स्वामी, माधव स्वामी इत्यादि संत सेवा में लगे रहे।

सभा संचालन शा. स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी तथा पुजारी स्वा. अजयप्रकाशदासजीने किया था। इस प्रसं गपर कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी तथा अन्यधामों से संत पधारे थे । सां.यो. बहने भी इस अवसर पर पधारी थी । समग्र महोत्सव के मुख्य यजमान श्रीमती कोकिलाबहन मफतभाई पटेल परिवार था। १०००० जितने भक्तों ने लाभ लिया था । (अमृतबाई पटेल - सुघड)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीपुर में खात पूजन

मणीपुर गाँव में १०० वर्ष पूर्व प.पू. आचार्य महाराजश्री वासुदेवप्रसादजी महाराजश्री ने मंदिर में ठाकुरजी की प्रतिष्ठा की थी। जिस मंदिर के जीर्ण होने पर जीर्णोद्धार का कार्य प.पू.ध.धु. आचार्य महारजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. देवप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से नूतन भव्य मंदिर की खात विधिता. २४-३-२०१४ को अमदावाद मंदिर के महंत स्वामी के हाथो सम्पन्न हुई थी। इस प्रसंग पर संतो की प्रेरक वाणी के बाद कथा में गाँव के हरिभक्त लाभ लिये थे । मंदिर के निर्माण में आर्थिक सहयोगी किये थे। (को. मणीपुर)

श्री नरनारायणदेव के उपलक्ष्य में धोलका से श्री नरनारायणदेव की सर्व प्रथम पदयात्रा

अमदावाद में सर्व प्रथम निर्माण हुए श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में बिराजमान श्री नरनारायणदेव के मंदिरो को जीर्णोध्धार पूर्ण होने पर तथा सुवर्ण सिंहासन के उद्घाटन प्रसंग पर दिसम्बर २०१४ में सम्पन्न होने वाले भव्यातिभव्य श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से समग्र अमदावाद देश में पूरे वर्ष भर विशेष कार्यक्रम मनाये जायेंगे।

जिस में धोलका श्री मोरली मनोहर देव का दर्शन करके स.गु. महंत शा.स्वामी पूर्णप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा ता. २३-३-१४ को प्रातः ५-०० बजे श्री नरनारायणदेव के दर्शनार्थ पदयात्रा का आयोजन किया गया था।

जो सायंकाल ६-०० बजे श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके पूर्ण हुई थी। पदयात्रियों का अमदावाद मंदिर के पू. महंत स्वामी, पू. देव स्वामी, पू. पी.पी. स्वामी ने पुष्पहार पहनाकर स्वागत किया था । प्रत्येक पदयात्रियों को प.भ. विनोदभाई कानजीभाई ठक्कर रसोई तथा रसिकभाई पटेल तथा मुकेशभाई ठक्कर (अरोडा) की तरफ से नास्ता तथा दाणीलीमडा एवं जीवराजपार्क के हरिभक्तों द्वारा ठन्ढे पानी की व्यवस्था की गयी थी । भूपेन्द्रभाई तथा महेशभाई की तरफ से सरबत, आईस्क्रीम की व्यवस्था की गयी थी।

(सुरेशभाई पुजारा धोलका)

श्री स्वामिनारायण मंदिर भाउपुरा पाटोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के पू. महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर भाउपुरा का वार्षिक पाटोत्सव विधिपूर्वक मनाया गया । ता. २४-२-१४ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक हुआ था । पू. पी.पी. स्वामी तथा विद्वान संतो द्वारा भगवत सम्बन्धी कथा प्रवचन किया गया था । यजमानश्री महेन्द्रभाई शिवदासभाई पटेल परिवारने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन किया गया था । समस्त सभा को प.पू. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशिर्वाद दिया था । अन्त में ठाकुरजी की आरती करके सभी को दर्शन का सुख प्रदान किये थे। जेतलपुर मंदिर के महंत स्वामी के मंडलने सम्पूर्ण व्यवस्था की थी।

(लालभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापूनगर) का ९ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत लक्ष्मणजीवनदासजी की प्रेरणा से ९वें पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. १-३-१४ से ता. ७-३-१४ तक संप्रदाय के

सुप्रसिद्ध कथाकार स्वा. निर्गुणदासजी के वक्तापद पर श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह का कथा पारायण किया गया था ।कथा में आनेवाले सभी उत्सव धूमधाम से मनाये गये थे ।

इस प्रसाग पर आयोजित महापूजा में २३० भक्त लाभ लिये थे । ता. २-३-१४ को प्रातः प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से नूतन संत निवास तथा मुख्य प्रवेश द्वार का भूमि पूजन किया गया था । ता. ७-३-१४ को प्रातः बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज का अभिषेक तथा अन्नकूट की आरती प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों की गयी थी । बहनों को दर्शन देने के लिये प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी पधारी थी ।इस प्रसंग पर अनेकों स्थानों से संत पधारे थे। प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । पाटोत्सव के पारायण के यजमान भालजा मंडल के प.भ. सोनी कस्तूरचंद पोपटलाल झिंझुवाडीया परिवार कृते प.भ. डॉ. हर्षदबाई शांतिभाई विनोदबाई तथा किशोरभाई थे । (कोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर रिद्रोल दशाब्दी महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वामी हरिकृष्णदासजी महंत स्वामी एवं देवप्रकाश स्वामी छोटे पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन में श्रीहरि के प्रसादीभूत रिद्रोल गाँव में ता. २६-२-१४ से २-३-१४ तक श्रीमद् भागवत पंचदिनात्मक कथा स्वा. रामकृष्णदासजी के वक्ता पद पर संपन्न हुई थी । जिस के यजमान कनुभाई बाबुलाल, पटेल मनुभाई बाबूलाल परिवार थे ।

ता. २-३-१४ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे ।उन्हीं के वरह हाथों यज्ञ की पूर्णाहुति, ठाकुरजी का पाटोत्सव, अन्नकूट की आरती की गयी थी ।

प्रासंगिक सभा में अनेकों धाम से संत पधारे हुए थे । सभी के उद्‌बोधन के बाद प.पू. महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था. सभा संचालन शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने किया था । समस्त गाँव पाटोत्सव का दर्शन करके तथा धर्मकुल का दर्शन करके धन्य हो गया था।

(पटेल केतन कनुभाई रिद्रोल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया ब्रह्मभोजन-पाटोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत गुरुप्रसाद स्वामी तथा आनंद स्वामी की प्रेरणा से महा प्रसादीभूत श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया में ब्रह्म भोजन तथा पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. १-३-१४ से ५-३-१४ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचाहन पारायण स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ था । ता. ५-३-१४ को प.पू. लालजी महाराजश्री प्रातः ६-३० बजे पधारकर ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक किये थे । कथा की पूर्णाहुति के बाद विशाल सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । सभा सचालन स्वा. यज्ञप्रकाशदासजीने किया था ।

बहनों को दर्शन-आशीर्वाद का सुखप्रदान करने के लिए अ.सौ.प.पू. गादीवालाजी पधारी थी । कांकरिया के युवक मंडल तथा महिला मंडल की सेवा सराहनीय थी । पू. देव स्वामी, पा. नरोत्तम भगत तथा नीरुभाई ठाकरने रसोई का कार्य भार संभाला था । हजारों ब्राह्मणों ने दिव्य लड्डू के प्रसाद को ग्रहण करके धन्य हो गये थे ।

(श्री न.ना.देव युवक मंडल कांकरिया)

कांकरोल में कथा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हार्दिक आशीर्वाद से तथा हिंमतनगर मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से कांकरोल गाँव में सभा का आयोजन किया गया था ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिजीवनदासजी ने स.गु. निष्कुलानंद स्वामी विरचित वचन विधिकी कथा सुमधुर शैली में की थी । (सुरेशभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर टांकिया में ३० वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा. स्वा. सिद्धेश्वरदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर टांकिया का ३० वाँ पाटोत्सव ता. ७-३-१४ को मनाया गया था । इस प्रसंग पर सर्व प्रथम ठाकुरजी का अभिषेक तथा अन्नकूट की आरती के बाद सभा में शा. माधवप्रियदासने कथा का लाभ दिया था । पा. जसु भगतने भी सुन्दर लाभ दिया था । अन्य गाँव जैसे कि डांगरवा, आनंदपुरा, करजीसण, वेडागोविंदपुरा, झुलासण के हरिभक्तों ने लाभ लिया था ।

इस प्रसंग पर भोजनप्रसाद के यजमान चौहाण अमथाभाई परिवार कृते महेन्द्रसिंह तथा सरपंच जसुजी थे ।

(कोठारीश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वेडा (गोविंदपुरा) ७२ वां पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा. सिद्धेश्वरदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर का ७२ वाँ पाटोत्सव ता. १९-३-१४ को मनाया गया था। सर्व प्रथम ठाकुरजी का अभिषेक तथा अन्नकूट की आरती की गयी थी । ता. १८-३-१४ को रात्रि में शा. माधवप्रियदासजी तथा जसु भगत ने कथा का लाभ दिया था । अन्य गाँवों से भी भक्तजनों ने कथा श्रवण का लाभ लिया था ।

(पटेल राजूभाई केशवलाल)

श्री नारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग द्वारा विगत वर्ष ली गयी परीक्षा का परिणाम कुल २५८० परीक्षार्थी थे

बाल सत्संग भाग-१ कुल १८६५, पास १८४०, अनुत्तीर्ण-१०, गेर हाजिर १५ ● किशोर सत्संग भाग-१ कुल १८६५, पास १८४०, अनुत्तीर्णत-१०, गेर हाजिर-१५ ● किशोर सत्संग भाग-२ कुल-७१५, पास ६९०, गेर हाजिर १५, कुल परिणाम ७५%

बाल सत्संग भाग-१ परीक्षा में पास होने वालोंकी स्मरणिका

१. प्रियंकाबहन शशीकांतभाई ९८% (बोपल) २. सोनी धार्मिक विपुलभाई ९८% (बोपल) ३. पटेल श्रेयस आर. ९८% (बोपल) ४. चौहाण वैशाली भीमाजी १००% (टांकीया) ५. चौहाण खुश्बु राजेन्द्रसिंह ९८% (टांकिया) ६. चौहाण युवराज किरीटसिंह ९८% (टांकिया) ७. चौहाण आरती शंकरजी ९८% (टांकिया) ८. पटेल विश्वीबहन विनोदभाई ९८% (मारुसणा) ९. पटेल व्योमेश मेहशभाई ९८% (मारुसणा) १०. पटेल जिज्ञ विष्णुभाई ९६% (मारुसणा) ११. पटेल पूजाबहन हसमुखभाई ९६% (मारुसणा) १२. पटेल फेनिल कमलेशभाई ९५% (हीरावाडी) १३. पटेल निगम दिलीपभाई ९६% (हीरावाडी) १४. पटेल श्रेया दशरथभाई ९३% (हीरावाडी) १५. पटेल प्रतीक वी. ९२% (न्यु राणीप) १६. पटेल पलक आशिषभाई ९१% (न्यु राणीप) १७. पटेल बिनल व्रिजेशभाई ९१% (न्यु राणीप) १८. चौधरी जयेशभाई शंकरभाई ८५% (कोटे. गुरुकुल) १९. मकवाणा चन्द्रकांत एम. ८८% (कोटे. गुरुकुल) २०. प्रजापति चिराग विनोदभाई ८५% (कोटे. गुरुकुल) २१. दोषी कीर्तनभाई ८९% (कालुपुर) २२. दोशी प्रसाद रमेसभाई ८८% (कालुपुर) २३. ठक्कर ध्रुविल पंकजभाई ८८% (कालुपुर) २४. प्रजापति कान्सीना विजयभाई ८८% (कालुपुर) २५. प्रजापति खुश्बू मनीषभाई ८५% (कालुपुर) २६. चौधरी लीना गेमरभाई ९५% (रामपुरा) २७. चौधरी पायल भरतभाई ८८% (रामपुरा) २८. चौधरी स्मित वसंतभाई ८८% (रामपुरा) २९. चौधरी गोपी भरतभाई ८८% (रामपुरा) ३०. वाघेला किरपालसिंह प्रवीणसिंह ८८% (लिंबोदरा)

किशोर सत्संग भाग-२ परीक्षा में उत्तमगुण पाने वालों की नामावलि

१. चावला पिनलबहन राजेन्द्रसिंह ८७% (डांगरवा) २. डाभी मेधनाबहन विनोदभाई ८५% (डांगरवा) ३. सोलंकी प्रियंकाबहन वी. ८४% (डांगरवा) ४. पटेल शिल्पाबहन नरेन्द्रभाई ८३% (आनंपुरा) ५. पटेल रोमाबहन एस. ८२% (आनंपुरा) ६. पटेल निलेशभाई ८२% (आनंपुरा) ७. पटेल निसर्ग नवीनभाई ८२% (जीवराजपार्क) ८. पटेल दिलीप गोविंदभाई ९२% (मारुसणा) ९. पटेल पूनमबहन सुरेशभाई ८४% (मारुसणा) १०. पटेल प्रतीक सुरेशभाई ८४% (मारुसणा) ११. पटणी आकाश ईश्वरभाई ८८% (को. गुरुकुल९ १२. मांगुकिया मयूर महेन्द्रभाई ८५% (को. गुरुकुल) १३. लकुम दशरथ भावसिंह ९९% (असारवा गुरुकुल) १४. किसन वासुदेवभाई ९८% (असारवा गुरुकुल) १५. मकवाणा प्रदीप भरतभाई ९९% (असारवा गुरुकुल) १६. मकवाणा भावेश हिंमतभाई ९८% (असारवा गुरुकुल) १७. पटेल राहुल रमेशभाई ९७% (असारवा गुरुकुल) १८. बारैया रमेश मगनभाई ९७% (असारवा गुरुकुल) १९. डांगोदरा संजय धीरुभाई ९४% (असारवा गुरुकुल) २०. श्वेता राकेश मंजीभाई ९५% (असारवा गुरुकुल)

श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग
संचालक - देवाजी रणछोड़भाई भीमजीभाई

श्री स्वामिनारायण मंदिर पोर का ८२ वाँ पाटोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी शा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर का ८२ वाँ पाटोत्सव ता. ३-३-१४ को धूमधाम से मनाया गया था। इस

प्रसंग पर पू. महंत स्वामी, छोटे पी.पी. स्वामी तथा स्वा. सिद्धेश्वरदासजीने ठाकुरजी की अन्नकूट की आरती उताकरक सभा में सुंदर कथा प्रवचन किया था। अन्नकूट के यजमान प.भ. रतीभाई मणीभाई पटेल थे।

(श्री न.ना.देव युवक मंडल पोर)

कलोल (पंचवटी) में प.पू. महाराजश्री के ४२ वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के प.पू.शा. पुरुषोत्तमप्रकासधासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल पंचवटी तथा वडु मंदिर में प.पू. महाराजश्री का ४२ वां जन्मोत्सव तथा गादी अभिषेक दशाब्दी महोत्सव के उपक्रम में समूह महापूजा रखी गयी थी। इस के अलावां कलोल श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा कलोल, सइज, इसंड, प्रतापपुरा, मोखासण, पलसाणा इत्यादि गाँवो में सत्संग सभा की गयी थी। कलोल महिला मंडल द्वारा कलोल विस्तार में सत्संग सभा की गयी थी। (महंत स्वामी श्री नरनारायणदेव देयवक मंडल, पचंवटी, कलोल)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

मूली में गुरु मंत्र प्रदान महोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से मूली में बिराजमान महाप्रतापी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के पवित्र सानिध्य में फाल्गुन शुक्ल पक्ष-११ एकादशी को मूली प्रदेश के हरिभक्तों को गुरुमंत्र प्रदान करने हेतु प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। बहनो को गुरुमंत्र प्रदान करने हेतु बहनों की गुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी पधारी थी।

इस प्रसंग पर सम्प्रदाय के मूर्धन्य सुप्रसिद्ध विद्वान कथाकार पूज्य शा.स्वा. निर्गुणदासजी (असारवा-गुरुकुल) तथा स.गु. शा. स्वा. सूर्यप्रकाशदासजीने धर्मवंशी आचार्य द्वारा गुरुमंत्र का सुंदर माहात्म्य समझाया था। अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने समस्त सभा को आशीर्वाद दिया था। पू. महंत स्वामी, श्यामसुंदरदासजी के मार्गदर्शन से मुकुंद स्वामी व्रज स्वामी, हरिकृष्ण स्वामी, भरत भगत, प्रविण भगत, आदि संत पार्षद मंडलने सुंदर सेवा की। सभा संचालन शैलेन्द्रसिंह झालाने किया। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर टींबा में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आशीर्वादात्मक आज्ञा से तथा मूली मंदिर के संतो की प्रेरणा से मूली श्री राधाकृष्णदेव की टींबा गाँव के भाईयों तथा बहनो के लिए पुराने जीर्ण मंदिर के स्थान पर नूतन भव्य मंदिर स.गु. महंत स्वामी देवप्रसाददासजी गुरु स.गु. स्वामी जगतप्रकाशदासजी के संपूर्ण मार्गदर्शन से पूर्ण हुआ। मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव ता. १२-३-१४ से ता. १८-३-१४ तक धूमधाम से मनाया गया। इस प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण शा. स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा) तथा शा. स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण) ने की। साथ ही ११ सहिंता पाठ, अन्नकूट, महाभिषेक, रंगोत्सव फुलदोलोत्सव और रात्रि में सांस्कृति कार्यक्रम किये गये। ता. १७-३-१४ को प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। संत-हरिभक्तों के अति आग्रह के कारण भव्य रंगोत्सव मनाया गया। झालावाड का सत्संग समुदाय धर्मकुल में प्रोत हो गया था। बहनो को दर्शन देने हेतु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्रीने पधारकर आशीर्वाद दिये।

ता. १८-३-१४ को प.पू.ध.धु. आचार्य महारजाश्री का संत-पार्षद मंडल के साथ शुभ आगमन होते ही समग्र गाँव में शोभायात्रा निकाली गयी। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री दोने मंदिरो में श्री घनश्याम महाराज, श्री नरनारायणदेव तथा श्री राधाकृष्णदेव की प्राण प्रतिष्ठा की।

यजमानोने धर्मवंशी का पूजन आरती करके आशीर्वाद लिया। साथ ही यहां की भूमि (गाँव में) जन्म लेकर त्यागी हुए संतो में स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी, शा.स्वा. घनश्यामप्रसाशदासजी, शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी, स्वामी विष्णुप्रसाददासजी तथा हजुरी पार्षद वजेसिंह (बाद) भगतका सन्मान किया गया। इस प्रसंग में स.गु. स्वा. जगतप्रकाशदासजी, स.गु. स्वामी कृष्णवल्लभदासजी आदि संतगण सातो दिन उपस्थित रहे थे। सातो दिन प्रसाद का आयोजन किया गया था। समग्र महोत्सव के मार्गदर्शक प्रेरक तथा सभा संचालन कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी थे। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सूर्यनगर (भाईओ का) में नूतन मंदिर का खातमूहूर्त का आयोजन किया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री राधाकृष्णदेव मूली के श्री स्वामिनारायण मंदिर, सूर्यनगर (सुंदरगढ) के (ता. हलवद) में खातमुहूर्त ता. १९-३-१४ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथो से सम्पन्न हुआ । अ.नि. स.गु. शा.स्वा. गोपालचरणदासजी की दिव्य प्रेरणा से मूली मंदिर के महंत स.गु. शा.स्वा. श्यामसुंदरदासजी के मार्गदर्शन से तथा समस्त हरिभक्तों के सहयोग से मंदिर का निर्माण किया जायेगा । इस प्रसंग पर महापूजा भी की गयी । मूली, सुरेन्द्रनगर, चराडवा, नारायणघाट, बोपल तथा हलवद आदि स्थानों से संतगण पधारे थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने मंदिर जल्दी निर्माण पूर्ण हो ऐसे आशीर्वाद दिये ।

(कोठारीश्री, सुरेन्द्रनगर)

सरागाँव में कथा पारायण

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री के शुभ आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री के आशीर्वाद से तथा सां. कमलाबाई की प्रेरणा से तथा सां. पुष्पाबाई के मार्गदर्शन से सां. पुष्पाबाई की जीवन चर्या अंतगर्त श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचदिनात्मक पारायण ता. ५-३-१४ से ता. ९-३-१४ पर्यन्त सां. कोकीलाबाई (सुरेन्द्रनगर) के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ । प्रथम दिवस पोथीयात्रा धूमधाम से निकाली गयी । इस प्रसंग पर प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाश्री पधारकर बहनो को आशीर्वाद दिये । रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये थे। (वसंतबहन सोनी)

विदेश सत्संग समाचार

कोलोनीया मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री को पदार्पण

श्री नरनारायणदेव स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया में ता. २५-१४ की साम को ७-३० बजे विजया दशमी को सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री भी पदार्पणप की थी । प.पू. बड़े महाराजश्रीने ठाकुरजी की आरती की । महंत शा.स्वा. धर्मकिशोरदासजीने समग्र मंदिर की तरफ से प.पू. बड़े महाराजश्री का फूलहार से स्वागत किया । बहना प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री का स्वागत पूजन करके आशीर्वाद लिए । सभा में महंत स्वामीने कहा कि, हम बहुत भाग्यवान है कि हमें आज श्रीहरि के अपर स्वरुप के दर्शन हुए । प.पू. बड़े महाराजश्री तथा पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से ही सत्संग का प्रसार हुआ है ।

अंत में प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए कहा कि, आप बहुत भाग्यशाली है, ऐसे संतो द्वारा मंदिर में सत्संग का लाभ मिल रहा हैं । आप सभी को महाराज सुखी रखे ऐसी महाराज से प्रार्थना । अंत में हरिभक्तों ने चरण स्पर्श किया ।

(प्रविण शाह)

किलवलेन्ड ओहायो श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महारजाश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी स्वयंप्रकाशदासजी की प्रेरणा से किलवलेन्ड श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १-३-१४ के शनिवार को धूमधाम से शिवरात्री का प्रसंग मनाया गया । इस प्रसं के निमित्त मंदिर में सेवा देने वाले भूदेव हर्षदभाई उपाध्याय तथा आनंदभाई उपाध्यायने वेदोक्त षोडशोपचार सहित शिवपूजन कई यजमानो से करवाया । सभा में महंत स्वामीने शिवपूजन को सुंदर महिमा बताई । ता. १६-३-१४ को पवित्र पूनम को श्री नरनारायणदेव जयंती तथा होली-धूलहटी के प्रसंग पर महंत स्वामी तथा स्थानिक हरिभक्तों के सहयोग से श्री नरनारायणदेव का फूलो के वस्त्रो से श्रृंगार किया गया था । सुंदर फूलो के झूले पर श्री नरनारायणदेव को झुलाया गया था । हरिभक्तोंने झुलोत्सव में कीर्तन गाकर श्री नरनारायणदेव को प्रसन्न किया । इन दोनो प्रसंग पर बहनोने सुदंर सभा का आयोजन किया था ।

(महंत स्वामी तथा कमिटी कलिवलेन्ड)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोस्टन

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर बोस्टन में वसंत पंचमी, शिक्षापत्री जयंती, हरिभक्तों ने धूमधाम से मनायी । इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री के श्रीमुख से गाये हुए ओडियो विझन द्वारा शिक्षापत्री समूह पाठ किया गया ।

ब्र. स्वामी पवित्रानंदजी गुरु ब्र. स्वामी वासुदेवानंदजी (महंतश्री छपैया गाँव) ने सुंदर कथा की ।

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान को तथा धर्मकुल को प्रसन्न करके संतो, हरिभक्तों तथा श्री

नरनारायणदेव युक मंडलने सुंदर सेवा की अंत में सभी को प्रसाद दिया गया। (ब्र. स्वा. पवित्रानंदजी, बोस्टन)

श्री स्वामिनारायण मंदिर विल्सडरलेन लंडन द्वारा सेवाकीय प्रवृत्ति

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा भूज मंदिर के संतो की प्रेरणा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर लंडन विल्सडनलेन के हरिभक्तों ने यहाँ बसने वाले गरीबो की सेवा करने का अभियान प्रारंभ किया है। उसके प्रारंभ स्वरुप वर्तमान में तीन बुधवार को लंडन के मध्य विस्तार में स्वयं जाकर ४५० जितने गरीब लोगों को प्रसाद स्वरुप गरम भोजन तथा ठंडी से रक्षण हेतु गरम वस्त्र दिये। साथ-साथ फल, बिस्कीट, केक तथा पानी दिया गया। समग्र सेवा प्रवृत्ति में विल्सडन मंदिर के युवक-युवति मंडलने समूह में काम किया। ऐसे सद्कार्य में सहकार देने वाले युवक-युवतियों द्वारा मंदिर की कमिटी के सदस्यों तथा डोनेटरो द्वारा सेवा प्रवृत्ति की जा रही है।

(श्री स्वामिनारायण मंदिर, विल्सडन-लंडन)

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजली

वजापुर : प.भ. पटेल शंभुभाई गोबरदास ता. १२-२-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए हैं।

रणजीतगढ - ता. हलवद : प.भ. नानजीभाई वशरामभाई चावडा ता. १-३-१४ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए हैं।

अमदावाद-हीरावाडी : प.भ. मगनभाई अंबाभाई पटेल ता. १-३-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए हैं।

कलोल - : श्री नरनारायणदेव गादी के निष्ठावान प.भ. बापूदास ईश्वरदास पटेल (चांदीसणावाला) के चिं. सुपुत्र प.भ. रमेशभाई बापूदास पटेल ता. ७-३-१४ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए हैं।

दहेगाँव-नांदोल : प.भ. कांतिभाई डाह्याभाई पटेल ता. ९-३-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए हैं।

अमदावाद (मूली-मोरबी) : प.भ. सोनी जमनादासभाई मगनलाल ता. ११-३-१४ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए हैं।

गोविंदपुरा-वेडा : प.भ. विनुभाई व्रजलाल कडीया (लोदरावाला) ता. १२-३-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए हैं।

नवावाडज-अमदावाद : प.भ. मफतलाल संकरलाल भावसार ता. १२-३-१४ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए हैं।

दहेगाँव-नांदोल : प.भ. रमेशभाई बाबरभाई पटेल ता. २१-३-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए हैं।

अमदावाद (मूल-मोरवासण गाँव) : परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान धर्मकुल कृपापात्र दंढाव्य देश के अग्रगण्य हरिभक्त प.भ. श्री जयंतीभाई अंबाभाई पटेल (उम्र ६४ वर्ष) (नेशनल टांकीवाला) ता. २६-३-१४ को को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए हैं। उनके परिवार को श्रीहरि धैर्य तथा प्रेरणाशक्ति प्रदान करें ऐसी प्रार्थना।

मोरवासण : प.भ. चिनुभाई हरगोविंददास पटेल के छोटे भाई जो अपने मंदिर में खूब सेवा करने वाले प.भ. रमेशभाई हरगोविंददास पटेल (उम्र ४८ वर्ष) ता. २८-४-१४को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए हैं।

कुकडिया (ईडर देश) : प.भ. विजयसिंहजी कोदारसिंहजी (उम्र ७३ वर्ष) ता. १४-३-१४ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर भावपुरा में पाटोत्सव प्रसंग पर आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(२) श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच में पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट आरती उतारते हुए प.पू. महाराजश्री ।(३) रिद्रोल गाँव में सभा में कथा के यजमान प.पू. महाराजश्री की आरती उतारते हुए ।(४) श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर पाटोत्सव प्रसंग पर व्यास पूजन करते हुए प.पू. महाराजश्री ।(५) कोठंबा मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुए प.पू. महाराजश्री ।(६) श्री स्वामिनारायण मंदिर सुघड में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए तथा श्रीफल होमात्मक पूर्णाहुति करते हुए प.पू. महाराजश्री ।(७) कलोल श्रीनगर मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट की आरती उतारते हुए महंत स्वा. हरिकृष्णदासजी ।(८) सादरा गाँव में नूतन मंदिर का खात पूजन करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(९) बालवा मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन । (१०) महेसाणा में कसलीबाई के घर प्रसादी की वस्तुओं का पूजन करते हुए तथा महेसाणा मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री ।(११) श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष में धोलका से अमदावाद श्री नरनारायणदेव की पदयात्रीओ का स्वागत करते हुए महंत शा.स्वामी हरिकृष्णदासजी एवं महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट)

Registered under RNI NO.-GUJHIN/2007/20220 "Permitted to post at Ahd PSO on 11th every month under postal Regd. No.GUJ.581/12-14 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2014

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर डिट्रोईट में फूलदोलोत्सव दर्शन ।
(२) श्री स्वामिनारायण मंदिर लोस एन्जल्स में फूलदोलोत्सव दर्शन ।
(३) सानहोजे श्री स्वामिनारायण मंदिर में फूलदोलोत्सव दर्शन ।
(४) कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में फूलदोलोत्सव का दर्शन ।
(५) कलिवलेन्ड मंदिर में शिवपूजन करते हुए हरिभक्त ।
(६) वोशिंग्टन डी.सी. मंदिर में शिवपूजन करते हुए हरिभक्त ।

निर्णय की एप अपडेट हो गई है ।

श्री नरनारायणदेव मडोत्सव
ता. २१ थी २४ डिसेम्बर-२०१४

Jagadish Offset
Praful Kharsani